अपठित बोध

अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

अपठित गद्यांश

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन का मार्ग है–संयम। संस्कारों को परिमार्जित करने का नाम भी संयम है। यदि हमारे जीवन में स्वास्थ्य व संतुलन न हो तो जीवन सुचारु रूप से नहीं चल पाएगा और कोई भी मानव असंतुलित एवं अस्वस्थ जीवन भी नहीं चाहेगा। जो हमारे मन और इंद्रियों को मलिन करे, ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। शरीर के अस्वस्थ होने पर हम विचार करते हैं कि गलत खाने से तबीयत बिगड़ जाएगी; इसलिए अपाच्य भोजन मत ग्रहण करो; पर यहाँ हमारी चेतना और आत्मा की तबीयत रोज़ बिगड़ रही है, तब कोई चिंता नहीं। हमारे भीतर से ही यह विचार आना चाहिए कि जैसे शरीर की फ़िक्र है, वैसे ही चेतना के उत्थान और पतन के लिए मुझे ही सोचना है। इंद्रियाँ घोड़े के समान हैं। घोड़े पर यात्रा करने के लिए उसकी लगाम हम हाथ में रखते हैं। इसी तरह जब हम इंद्रिय-घोड़े पर सवार होते हैं, तब हमारे मन की लगाम हाथ में रहे तो सारा काम आसानी से हो सकता है। आवश्यकता है, संस्कारों के परिष्कार की। यदि आप अपने स्वस्थ-चरित्र और आदर्शों के बल पर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तो यह संसार स्वयं ही आपकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

1. लेखक के अनुसार संयम है–

(क) संतुलित आहार
(ख) स्वस्थ व संतुलित शरीर
(ग) स्वस्थ व संतुलित जीवन
(घ) अस्वस्थ व असंतुलित जीवन।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–स्वास्थ्य एवं संतुलन के अभाव में जीवन सुचारु रूप से नहीं चल सकता।

कारण (R)–कोई भी व्यक्ति अस्वस्थ एवं असंतुलित जीवन नहीं चाहता।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. जीवन में स्वास्थ्य व संतुलन का होना क्यों आवश्यक है–

(क) जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए
(ख) चेतना और आत्मा की तबीयत न बिगाड़ने के लिए
(ग) इंद्रियों पर लगाम कसने के लिए
(घ) मन और इंद्रियों को मलिन करने के लिए।

4. संस्कारों को परिमार्जित करना क्या है–

(क) नियम (ख) संयम
(ग) स्वच्छता (घ) पवित्रता।

5. 'लगाम हाथ में रहना' का अर्थ है–

(क) बाँध लेना (ख) खूब दौड़ाना
(ग) नियंत्रण में रहना (घ) खुली छूट देना।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)।

(2) किसी भी देश के युवा-वर्ग को उसकी प्रगति का आधार माना जाता है। युवा-वर्ग कुछ नया करने की जिज्ञासा के साथ आगे बढ़ता है, नई चीज़ों को जानने, परखने, खोज करने की ओर अग्रसर रहता है। युवा-वर्ग साहस व शक्ति से परिपूर्ण होता है। किसी भी कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार करना उसकी आदत व स्वभाव होता है, परंतु आज कई कारणों से युवा-वर्ग दिशाहीन होता जा रहा है। यद्यपि उसे पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं, पर इसके बावजूद वह नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगा है। इसका कारण है, उसकी बेरोज़गारी। इस बेरोज़गारी ने उसे कुंठाग्रस्त बना दिया है। युवा-वर्ग अपराधों की ओर उन्मुख होने लगा है। वह किसी-न-किसी तरह अधिक से-अधिक धन पा लेना चाहता है; अतः साधनों की परवाह नहीं करता। यह स्थिति भयावह है। युवा-पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इस स्थिति से बचने के लिए शिक्षा को रोज़गारपरक बनाना होगा। उनकी सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना होगा तथा उनमें नैतिक मूल्य संस्कारित करने होंगे।

1. कौन-सी विशेषता युवा-वर्ग की नहीं है–

(क) किसी कार्य को चुनौती के रूप में लेना
(ख) कुछ नया करने की जिज्ञासा होना
(ग) परंपरा व रूढ़ियों का पालन करना
(घ) साहस व शक्ति से परिपूर्ण होना।

2. युवा-पीढ़ी के कुंठाग्रस्त होने का क्या कारण है–

(क) अशिक्षा (ख) बेरोज़गारी
(ग) नकारात्मक सोच (घ) उपेक्षा।

3. आज युवा-वर्ग का लक्ष्य क्या है–

(क) अधिक-से-अधिक धन पाना
(ख) ऊँची शिक्षा प्राप्त करना
(ग) चरित्र का निर्माण करना
(घ) समाज की उन्नति करना।

4. 'कुंठाग्रस्त' में कौन-सा समास है–

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष
(ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि।

5. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–युवा वर्ग किसी देश की प्रगति का आधार होता है।

कारण (R)–वह कुछ नया करने की जिज्ञासा के साथ आगे बढ़ता है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)।

(3) एक दिन गुरु नानक यात्रा करते-करते भाई लालो नाम के एक बढ़ई के घर ठहरे। उस गाँव का भागो नामक रईस बड़ा मालदार था। उस दिन भागो के घर ब्रह्मभोज था। दूर-दूर से साधु आए हुए थे। गुरु नानक का आगमन सुनकर भागो ने उन्हें भी निमंत्रण भेजा। गुरु ने भागो का अन्न खाने से इनकार कर दिया। इस बात पर भागो को बड़ा क्रोध आया। उसने गुरु नानक को बुलवाया और उनसे पूछा–आप मेरे यहाँ का अन्न ग्रहण क्यों नहीं करते। गुरुदेव ने उत्तर दिया–भागो, अपने घर का हलवा-पूरी ले आओ, तो हम इसका कारण बतला दें। वह हलवा-पूरी लाया तो गुरु नानक ने लालो के घर से भी उसके मोटे अन्न की रोटी मँगवाई। भागो की हलवा-पूरी उन्होंने एक हाथ में और भाई लालो की मोटी रोटी दूसरे हाथ में लेकर दोनों को जो दबाया, तो एक से लहू टपका और दूसरी से दूध की धारा निकली। बाबा नानक का यही उपदेश हुआ। जो धारा भाई लालो की मोटी रोटी से निकली थी, वही समाज का पालन करने वाली दूध की धारा है, यही धारा शिव जी की जटा से और यही धारा मज़दूरों की उँगलियों से निकलती है।

मज़दूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मज़दूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने ऐसी कलावती कन्याओं और स्त्रियों को देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी दस्तकारी की बदौलत हज़ारों की कीमत का बना देती हैं; नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती हैं। जापान-निवासी कागज़, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं। करोड़ों रुपये के हाथ के बने हुए जापानी खिलौने विदेशों में बिकते हैं। हाथ की बनी हुई जापानी चीज़ें मशीन से बनी हुई चीज़ों को मात करती हैं। संसार के सब बाज़ारों में उनकी बड़ी माँग रहती है। पश्चिमी देशों के लोग हाथ की बनी हुई जापान की अद्‌भुत वस्तुओं पर जान देते हैं। एक जापानी तत्त्वज्ञानी का कथन है कि हमारी दस करोड़ उँगलियाँ सारे काम करती हैं।

1. भाई लालो कौन था–

(क) एक लुहार (ख) एक सुनार
(ग) एक बढ़ई (घ) एक ज़मींदार।

2. गाँव में किसके घर ब्रह्मभोज था–

(क) कल्लू कुम्हार के (ख) भागो रईस के
(ग) लालो बढ़ई के (घ) हरिया किसान के।

3. कथन (A) कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–भागो ने गुरु नानक को निमंत्रण भेजा।

कारण (R)–गुरु नानक ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. मज़दूरी से क्या होता है–

(क) हृदय पवित्र होता है
(ख) संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं
(ग) सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. पश्चिमी देशों के लोग किस पर जान देते हैं–

(क) जानवरों पर
(ख) पक्षियों पर
(ग) जापान की हाथ से बनी चीज़ों पर
(घ) चीन के खिलौनों पर।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(4) जब कोई युवा अपने घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिलकुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं, और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका मेल-जोल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का बड़ा भारी गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले; चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी ही अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर जीवन की सफलता निर्भर होती है।

कारण (R)–संगति का बड़ा भारी गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. कैसे लोगों का मेल-जोल शीघ्र बढ़ जाता है–

(क) जो एकांतप्रिय होते हैं
(ख) जो बहुत कम बोलते हैं
(ग) जो वाक्‌पटु नहीं होते
(घ) जिनकी स्थिति बिलकुल एकांत और निराली नहीं रहती।

3. हम कैसे समय में समाज में प्रवेश करते हैं–

(क) जब हमारा चित्त कोमल और हर तरह के संस्कार ग्रहण करने योग्य होता है
(ख) जब हमारे भाव अपरिमार्जित और प्रवृत्ति अपरिपक्व होती है
(ग) जब हम कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान होते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. कैसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है–

(क) जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं
(ख) जो बहुत निर्धन हैं
(ग) जो हमसे अधिक बलवान हैं
(घ) जो हमसे अधिक विद्‌वान हैं।

5. लेखक ने घोड़े का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है–

(क) मित्र चुनाव के (ख) यात्रा के
(ग) युद्‌ध के (घ) व्यापार के।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (क)।

(5) संसार में अमरता ऐसे ही लोगों को मिलती है, जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं, जिनका स्थायी मूल्य होता है। बहुधा यही देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति संपन्न परिवार में बहुत कम पैदा होते हैं। अधिकांश ऐसे लोगों का जन्म मध्यम वर्ग के घरों में या ग़रीब परिवारों में ही होता है। इस तरह का पालन-पोषण साधारण परिवार में होता है और वे सादा जीवन बिताने के आदि हो जाते हैं।

मनुष्य में विनय, उदारता, कष्ट-सहिष्णुता, साहस आदि चारित्रिक गुणों का विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। ये गुण व्यक्ति के जीवन को अहंकारहीन या सादा-सरल बनाते हैं। सादा जीवन या सादगी का अर्थ है– रहन-सहन, वेशभूषा और आचार-विचारों का एक निर्दिष्ट स्तर। जीवन में सादगी लाने के लिए दो बातें विशेष रूप से करणीय हैं, प्रथम कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में धैर्य को न छोड़ना, द्वितीय अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बनाना।

सादगी का विचारों से भी घनिष्ठ संबंध है। सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च बनाए रखना चाहिए। व्यक्ति की सच्ची पहचान उसके विचारों और करनी से होती है। मनुष्य के विचार उसके आचरण पर प्रभाव डालते हैं और उसके विवेक को जाग्रत रखते हैं। विवेकशील व्यक्ति ही अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखता है। उन्हें अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को कभी हतप्रभ होकर अपने आत्मसम्मान पर आँच नहीं आने देनी चाहिए। सादगी मनुष्य के चरित्र का अंग है, वह बाहरी चीज़ नहीं है। महात्मा गांधी सादा जीवन पसंद करते थे और हाथ के कते और बुने खद्दर के मामूली वस्त्र पहनते थे, किंतु अपने उच्च विचारों के कारण वे संसार में वंदनीय हो गए।

1. **संसार में अमरता कैसे लोगों को मिलती है–**
   (क) जो खूब धन कमाते हैं
   (ख) जो भजन-कीर्तन करते हैं
   (ग) जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं
   (घ) जो केवल अपने लिए जीते हैं।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) – महापुरुषों का पालन-पोषण साधारण परिवार में होता है।
   कारण (R)–वे सादा जीवन बिताने के आदी हो जाते हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
3. **जीवन को सादा-सरल बनाने के लिए क्या आवश्यक है–**
   (क) सादा भोजन (ख) सादे वस्त्र
   (ग) चारित्रिक गुणों का विकास (घ) शिष्ट भाषा।
4. **व्यक्ति की सच्ची पहचान किससे होती है–**
   (क) वस्त्रों से (ख) खान-पान से
   (ग) रंग-रूप से (घ) विचारों और करनी से।
5. **गांधीजी किस कारण संसार में वंदनीय हुए–**
   (क) अपने वस्त्रों के कारण
   (ख) अपनी शिक्षा के कारण
   (ग) अपने उच्च विचारों के कारण
   (घ) अपनी वीरता के कारण।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)।

(6) परिवार का नियोजन कैसा होगा? इस प्रश्न पर विचार करना समीचीन है। परिवार को सीमित रखने के प्रयत्न में ही परिवार-कल्याण का भाव निहित है। मनुष्य को यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि परिवार को बिना सोचे-समझे बढ़ाते चले जाना मूर्खता के सिवाय कुछ नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप परिवार-कल्याण का कार्य पिछड़ जाता है। परिवार के सभी लोगों को सुख-समृद्धि तभी प्राप्त होगी, जब परिवार के सदस्यों की संख्या सीमित होगी। एक व्यक्ति की आय को बाँटने वाले जब कम होंगे, तब उसे पाने वालों को अधिक धन की प्राप्ति होगी। जनसंख्या-वृद्धि ने देश के सम्मुख ऐसी विकट समस्याएँ उपस्थित कर दी हैं कि उनका हल खोजना कठिन होता चला जा रहा है। जिधर देखो, उधर ही लंबी-लंबी कतारें दिखाई देती हैं। इसी कारण नौकरी के अवसरों की भी कमी होती चली जा रही है। परिणामस्वरूप बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है।

यह प्रश्न विचारणीय है कि परिवार-नियोजन को ध्यान में रखते हुए परिवार को छोटा कैसे रखा जाए? इसके लिए आम जनता में चेतना जाग्रत करनी होगी। जनसंख्या-शिक्षा भी इस विषय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। लोगों को समझाया जाना चाहिए कि जनसंख्या-वृद्धि से उनके परिवार को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अन्न का अभाव, परिवहन-सुविधा में कमी, चिकित्सा में कठिनाई, शिक्षा तथा नौकरी के अवसरों में कमी आदि का प्रत्यक्ष प्रभाव हम सभी पर पड़ेगा। परिणामस्वरूप परिवार की ही नहीं, पूरे समाज की सुख-सुविधा में कमी आ जाएगी।

1. **परिवार-कल्याण का भाव किसमें निहित है–**
   (क) परिवार के पालन-पोषण में (ख) परिवार को समृद्ध करने में
   (ग) परिवार को सीमित रखने में (घ) परिवार को बढ़ाने में।
2. **परिवार के लोगों को सुख-समृद्धि कब प्राप्त होगी–**
   (क) जब वे खूब पैसा कमाएँगे
   (ख) जब वे खूब परिश्रम करेंगे
   (ग) जब वे संख्या में अधिक होंगे
   (घ) जब उनकी संख्या सीमित होगी।
3. **बेरोज़गारी बढ़ने का क्या कारण है–**
   (क) अशिक्षा (ख) योग्यता में कमी
   (ग) जनसंख्या-वृद्धि (घ) लोगों का आलस्य।
4. **परिवार को छोटा रखने का सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय है–**
   (क) शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना (ख) जन-चेतना जाग्रत करना
   (ग) कठोर नियम लागू करना (घ) इनमें से कोई नहीं।
5. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–हमारे देश की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि हो रही है।
   कारण (R)–इससे परिवार-कल्याण का कार्य पिछड़ रहा है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)।

(7) विद्वान नम्रता को स्वतंत्रता की जननी मानते हैं। साधारण लोग भ्रमवश अहंकार को उसकी माता मानते हैं। वास्तव में वह विमाता है। आत्मसंस्कार हेतु स्वतंत्रता आवश्यक है। मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए आत्मनिर्भरता ज़रूरी है। आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक है कि हम बड़ों से सम्मानपूर्वक, छोटों और बराबर वालों के साथ कोमलता का व्यवहार करें। नम्रता का अर्थ दूसरों का मुँह ताकना नहीं है। इससे तो प्रज्ञा मंद पड़ जाती है। संकल्प क्षीण होता है, विकास रुक जाता है तथा निर्णय-क्षमता नहीं आती। मनुष्य को अपना भाग्य-विधाता स्वयं होना चाहिए। अपने फ़ैसले तुम्हें स्वयं ही करने होंगे। विश्वासपात्र मित्र भी तुम्हारी ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता। हमें अनुभवी लोगों के अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए, लेकिन हमारे निर्णयों तथा हमारे विचारों से ही हमारी रक्षा भी होगी और पतन भी होगा। हमें नज़रें तो नीची रखनी हैं, लेकिन रास्ता भी देखना है। हमारा व्यवहार कोमल तथा लक्ष्य उच्च होना चाहिए।

1. कौन लोग नम्रता को स्वतंत्रता की माता मानते हैं–

(क) साधारण लोग (ख) मित्रगण

(ग) विद्वान लोग (घ) धनवान लोग।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–मनुष्य को अपना भाग्य-विधाता स्वयं होना चाहिए।

कारण (R)–हमें अनुभवी लोगों से लाभ उठाना चाहिए।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. हमारे पतन के लिए कौन उत्तरदायी है–

(क) हमारे निर्णय और विचार (ख) लोगों के अनुभव

(ग) हमारे मित्र (घ) अहंकार।

4. दूसरों का मुँह ताकने का परिणाम नहीं है–

(क) संकल्प क्षीण होना (ख) विकास रुक जाना

(ग) निर्णय-क्षमता का अभाव (घ) उन्नति होना।

5. 'भाग-विधाता' में समास है–

(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय

(ग) द्विगु। (घ) द्वंद्व।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (क)।

(8) पढ़ाई में या काम के दौरान ऐसे कई अवसर आते हैं, जब आप उपेक्षित और खिन्न महसूस करते हैं। न चाहते हुए भी कई बार दिन की शुरूआत अनचाही समस्याओं से होती है। ऐसे समय में खुद पर आपका भरोसा कम हो जाता है। आप इस स्थिति से उबरने के लिए हर तरह के उपाय आजमाते हैं–प्रार्थना करते हैं; मंदिर-मसज़िद जाते हैं; ज्योतिषी या तांत्रिक के चक्कर काटते हैं, पर इस बात का विश्लेषण नहीं करते कि आखिर इस परिस्थिति से निकलने के लिए क्या प्रयास किए जाएँ और यह संकट आया क्यों? दरअसल हम अपनी समस्याओं की चर्चा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं और दूसरों की सहानुभूति चाहते हैं, लेकिन सहानुभूति या दया से समस्या हल नहीं होती। हम रात-दिन उसी मुसीबत के बारे में सोचते रहते हैं और इस प्रकार वह पूरी तरह हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाती है। यह हमारे ऑफ़िस के और घर के कामों को भी प्रभावित करने लगती है। इससे पूरा परिवार तनाव में आ जाता है; क्योंकि वह भावनात्मक रूप से आपसे मज़बूती से जुड़ा होता है, वह हमेशा आपको ही सही मानता है। इस पूरी प्रक्रिया में यदि हम स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करें तो हो सकता है, ऐसी स्थिति से बाहर निकलने में मदद मिल जाए। परिस्थितियों का ठीक-ठाक मूल्यांकन करके आप आसानी से समाधान तक पहुँच सकते हैं। किसी भी समस्या का हल उसकी जड़ में होता है। यदि आप समस्या की जड़ तक पहुँच गए तो समाधान असंभव नहीं होगा।

1. मुसीबत के समय हम मंदिर-मसज़िद क्यों जाते हैं–

(क) भगवान हमारी मुसीबत दूर कर देगा

(ख) स्वयं पर हमारा भरोसा कम हो जाता है

(ग) हम मुसीबत का दोष भगवान पर मढ़ देते हैं

(घ) हम स्वयं कुछ करना नहीं चाहते।

2. हम अपनी समस्याओं की चर्चा बढ़ा-चढ़ाकर क्यों करते हैं?

(क) दूसरों की सहानुभूति पाने के लिए

(ख) दूसरों की मदद पाने के लिए

(ग) दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए

(घ) दूसरों के धैर्य की परीक्षा लेने के लिए।

3. समस्या में उलझने पर परिवार आपको ही सही क्यों मानता है–

(क) आपकी मदद करने के लिए

(ख) आपसे भावनात्मक रूप से जुड़े होने के कारण

(ग) इस सोच के कारण कि आप गलत हो ही नहीं सकते

(घ) आपको गलत बताने से समस्या बढ़ जाएगी।

4. 'समस्या की जड़ तक पहुँचने' का क्या अर्थ है–

(क) समस्या के प्रभाव को जानने का प्रयास

(ख) समस्या के समाधान को जानने का प्रयास

(ग) समस्या के मूल कारण को जानना

(घ) समस्या की जाँच-पड़ताल करना।

5. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) –कई बार दिन की शुरूआत अनचाही ही समस्याओं से होती है।

कारण (R)–ऐसे में खुद पर भरोसा कम हो जाता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(9) वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों का अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किंतु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष एवं उसके अवगुण, मिथ्याभिमान और थोथे आत्मगौरव के काले आवरण में इस प्रकार छिपे रहते हैं कि जीवनपर्यंत उसे दिखाई नहीं देते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुणसंपन्न देवता समझ बैठता है। आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं है। इसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। अपने गुणों-अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्मविश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को देखकर स्वयं कह सके। इसके विपरीत पर-निंदा में अपना कुछ नहीं बिगड़ता, उल्टे मनुष्य आनंद का अनुभव करता है। अपने दोष देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है।

1. आत्मविश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है–

(क) अनुभूति और अहंकार

(ख) थोथा आत्मगौरव व अभिमान

(ग) उदारता, सहनशीलता एवं महानता

(घ) अवगुण व दोष।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) –वास्तव में मनुष्य स्वयं को ही देखता है।

कारण (R)–उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को नहीं देखते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सहीं है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **मनुष्य स्वयं को सर्वगुण संपन्न देवता क्यों समझता है–**
   (क) मिथ्याभिमान और खोखले आत्मगौरव के काले आवरण में अपने दोष छिपाए रखने के कारण
   (ख) हमेशा दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण करते रहने के कारण
   (ग) उदारता और हृदय की विशालता की कमी के कारण
   (घ) दूसरों का सही मूल्यांकन न कर पाने के कारण।
4. **पर-निंदा क्यों सरल है–**
   (क) इसमें अपना कुछ नहीं बिगड़ता और आनंद आता है
   (ख) इसमें गर्व की अनुभूति होती है
   (ग) इसमें कुछ सोचना नहीं पड़ता
   (घ) इसमें अहंकार को चोट पहुँचती है।
5. **किस शब्द में 'अव' उपसर्ग नहीं लगा है–**
   (क) अवगुण (ख) अवशेष
   (ग) अवश्य (घ) अवनति।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 5. (ग)।

(10) मनुष्य नाशवान प्राणी है। वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है। अन्य लोगों की भाँति महापुरुष भी नाशवान हैं। वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं। उनके ये कार्य चिरस्थायी होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं। ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं, वे स्थायी होते हैं और बदली परिस्थितियों में नए वातावरण के अनुसार, अपने को ढाल लेते हैं। संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है, उनमें गांधीजी को यदि आज भी नहीं माना जाता तो भी भविष्य में उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा, बल्कि जीवनधारा को सदा एक और अविभाज्य माना। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं, वे वास्तव में उसी धारा की उपधाराएँ हैं, उसी भवन के अलग-अलग पहलू हैं। गांधीजी ने मानव-जीवन के इस नव-कथानक की व्याख्या न किसी हृदय को स्पर्श करने वाले वीरकाव्य की भाँति की और न ही किसी दार्शनिक महाकाव्य की भाँति ही। उन्होंने मनुष्यों की आत्मा में अपने को निम्नतम रूप में उचित कार्य के प्रति निष्ठा, किसी ध्येय की पूर्ति के लिए सेवा और किसी विचार के प्रति स्वार्पण के बीच सतत चलने वाले संघर्ष के नाटक की भाँति माना है। उन्होंने सदा साध्य को ही महत्त्व नहीं दिया, बल्कि उस साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा। साध्य के साथ-साथ उसकी पूर्ति के लिए अपनाए गए साधन भी उपयुक्त होने चाहिए।

1. **मनुष्य कैसा प्राणी है–**
   (क) अमर (ख) अजर
   (ग) नाशवान (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **महापुरुष किस कारण याद किए जाते हैं–**
   (क) अपने कार्यों के कारण (ख) अपने सम्मान के कारण
   (ग) अपने ज्ञान के कारण (घ) अपने धन के कारण।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –मनुष्य नाशवान प्राणी है।
   कारण (R)–वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **गांधीजी ने मानव-जीवन को किसकी भाँति माना–**
   (क) वीरकाव्य की भाँति (ख) दार्शनिक महाकाव्य की भाँति
   (ग) नाटक की भाँति (घ) कहानी की भाँति।
5. **गांधीजी को भविष्य में सबसे बड़ा क्यों माना जाएगा–**
   (क) उन्होंने जीवनधारा को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा
   (ख) उन्होंने जीवनधारा को विभाजित कर दिया
   (ग) उन्होंने जीवनधारा का निर्माण किया
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)।

(11) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के उद्दंड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार करें–इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न संप्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रांत और पद-दलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवों ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिए, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके, जो संसार के इतिहास के किसी युग के अत्यंत उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गांधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी को, रवींद्र जैसे मनीषी कवि को और अरविंद तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान और वैज्ञानिक पैदा किए, जिनका सिक्का संसार मानता है। हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मज़बूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक होने के कारण ही हम अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाए रख सके।

दूसरे, संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे देश और संप्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। बापू ने जन-साधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। जन-साधारण के हृदय में धड़कती चेतना को क्रांति की शक्ति बनाने में ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता भी।

1. **हमें किस बात ने सोचने के लिए मज़बूर किया–**
   (क) प्राकृतिक आपदाओं ने
   (ख) दूसरे देशों की उन्नति ने
   (ग) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों ने
   (घ) देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार ने।
2. **विपरीत परिस्थितियों और आपदाओं में भी भारतीयों ने किसे बनाए रखा–**
   (क) अपनी संस्कृति और सृजनात्मक शक्ति को
   (ख) अपनी एकता और अखंडता को
   (ग) परस्पर लड़ने के स्वभाव को
   (घ) अत्याचार सहने की शक्ति को।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–हमारे ऊपर अनेक प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाएँ आई हैं।
   कारण (R)–हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंत कारण (R) सहीं है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सहीं व्याख्या नहीं है।

4. गद्यांश में किस महापुरुष का वर्णन नहीं आया है–
(क) विवेकानंद (ख) गांधीजी
(ग) रवींद्रनाथ टैगोर (घ) अरविंद।

5. हमारी सामूहिक चेतना का नैतिक आधार है–
(क) पहाड़ों से भी मज़बूत (ख) समुद्र से भी गहरा
(ग) आकाश से भी व्यापक (घ) ये सभी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (घ)।

(12) आज हम सभी परेशान हैं कि समय पर वर्षा नहीं होती। कहीं अतिवृष्टि होती है, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। पिछली सदी के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है और अब तो अनिश्चित-सा हो गया है। पहले हर मौसम प्रायः समय पर आता था और वर्षा नियमित रूप से होती थी। यह स्थिति केवल भारत की नहीं है, बल्कि संपूर्ण विश्व की है। कहीं इतनी वर्षा होती है कि बाढ़ के कारण जन और धन की अपार हानि होती है तो कहीं बिलकुल वर्षा नहीं होती, जिससे खड़ी फ़सलें खेत में नष्ट हो जाती हैं। कुछ देशों में बरफ़ इतनी गिरती है कि जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। कभी-कभी जब फ़सल पक जाती है, तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है, जिससे अन्न को घर लाना असंभव हो जाता है। वायुमंडल में प्रदूषण और प्रकृति-असंतुलन के कारण भारत के अधिकांश भागों में सन् 1987 में बीसवीं शताब्दी का सबसे भयंकर सूखा पड़ा। साथ ही पूर्वी भारत में बाढ़ के भीषण प्रकोप से जन-धन की काफ़ी हानि हुई। यह प्राकृतिक विपदा मनुष्य-निर्मित है; क्योंकि मनुष्य स्वयं प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्यजन पीड़ित हैं और वैज्ञानिक चिंतित।
वैज्ञानिक खोजों से पता चलता है कि मौसम में परिवर्तन का कारण तथा फेफड़ों में कैंसर व हृदय के रोगों एवं मानसिक तनाव आदि का मुख्य कारण है–प्रकृति में असंतुलन। हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन प्रकृति-संतुलन से ही संभव हो सका है।

1. आज हम सभी किस बात से परेशान हैं–
(क) जनसंख्या वृद्धि से
(ख) बढ़ती महँगाई से
(ग) मौसम-चक्र में आए बदलाव से
(घ) अधिक गरमी से।

2. प्राकृतिक असंतुलन के कारण सन् 1987 में भारत में क्या हुआ–
(क) भयंकर सूखा पड़ा और भीषण बाढ़ आई
(ख) भूकंप से भारी तबाही हुई
(ग) भयंकर तूफान से जन-धन की हानि हुई
(घ) ओलावृष्टि से फ़सल नष्ट हो गई।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है।
कारण (R)–वर्षा अब समय पर होती है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. धरती पर जीवन संभव है–
(क) पर्यावरण-प्रदूषण से (ख) मौसम में परिवर्तन से
(ग) अधिक वृक्षारोपण से (घ) प्रकृति-संतुलन से।

5. प्रकृति-असंतुलन से होने वाली व्याधि है–
(क) फेफड़ों का कैंसर (ख) हृदय रोग
(ग) मानसिक तनाव (घ) ये सभी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ)।

(13) एक ज़माना था, जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी। सब मिल-जुलकर रहते थे। हारी-बारी, खुशी-गम, सब में लोग एक-दूसरे के साथ थे। किसी का किसी से कुछ छिपा नहीं था। आज के लोगों को शायद लगे कि लोगों की अपनी 'प्राइवेसी' क्या रही होगी, लेकिन इस 'प्राइवेसी' के नाम पर ही तो हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए। पहले अलग चूल्हे-चौके हुए, फिर अलग मकान लेकर लोग रहने लगे, निजी स्वतंत्रता को अपनी नई परिभाषा देकर यह एकाकीपन हमने स्वयं अपनाया है। मुहल्ले में आपस में चाहे जितनी चखचख हो, यह थोड़े ही संभव था कि बाहर का कोई आकर किसी को कड़वी बात कह जाए। पूरा मुहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था।
देखते-देखते ज़माना हवा हो गया। मुहल्लेदारी टूटने लगी, आबादी बढ़ी, महँगाई बढ़ी, पर सबसे ज़्यादा जो चीज़ दुर्लभ हो गई वह थी आपसी लगाव, अपनापन। लोगों की आँखों का शील मर गया।
देखते-देखते कैसा रंग बदला है! लोग अपने-आप में सिमटकर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं। सारे नाते-रिश्तों को उन्होंने ताक पर रख दिया है, तब फिर पड़ोसी से उन्हें क्या लेना-देना है। यह नीरस महानगरीय सभ्यता महानगरों से चलकर कस्बों और देहातों तक को अपनी चपेट में ले चुकी है। मकानों में रहने वाले एक-दूसरे को नहीं जानते। इन जगहों में आदमी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। यदि आपको फ्लैट नंबर मालूम नहीं है तो उसी बिल्डिंग में जाकर भी वांछित व्यक्ति को नहीं ढूँढ़ पाएँगे। ऐसी जगहों में किसी प्रकार के संबंध की अपेक्षा ही कहाँ की जा सकती है?

1. 'प्राइवेसी' से क्या तात्पर्य है–
(क) निजता (ख) आत्मीयता
(ग) मेल-जोल (घ) भाईचारा।

2. मुहल्लेदारी के बारे में क्या सच नहीं है–
(क) आपस में मिल-जुलकर रहना
(ख) दुःख-सुख में साथ देना
(ग) अपनी बात किसी से गुप्त न रखना
(घ) आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना।

3. आजकल के व्यक्ति को 'प्राइवेसी' के नाम पर प्राप्त हुआ है–
(क) अलगाव और अकेलापन
(ख) अपने में ही सीमित होने का आनंद
(ग) संयुक्त परिवार की समस्याओं से मुक्ति
(घ) मुहल्ले के झंझटों से छुटकारा।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –पहले मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी।
कारण (R)–पूरा मुहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सहीं व्याख्या है।

5. 'ताक पर रखना' का अर्थ है–
(क) उपेक्षा करना (ख) आशा रखना
(ग) छोड़ देना (घ) निंदा करना।

उत्तर— 1. (क) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)।

(14) प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं, लेकिन समस्या एक प्रतिभा को खुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक खास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुभुखी लोग स्पद्र्धा से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पद्र्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। वे आलोचना से भी डरते हैं और अपने काम में तारीफ़ सुनना चाहते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कई लोग, लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीदवार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक-से-दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दखल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में—'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें।

1. **किसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं–**
   (क) धन के आगे (ख) बल के आगे
   (ग) प्रतिभा के आगे (घ) साधन के आगे।
2. **बहुमुखी प्रतिभा क्या है–**
   (क) बहुत-से मुख वाली प्रतिभा
   (ख) बोलने वाली प्रतिभा
   (ग) अनेक मुखों से प्रतिभा का बखान करना
   (घ) अपने भीतर अनेक प्रतिभाएँ खड़ी करना।
3. **बहुमुखी प्रतिभा वालों में कौन-सी कमियाँ होती हैं–**
   (क) वे प्रतिस्पद्र्धा से घबराते हैं
   (ख) वे आलोचना से डरते हैं
   (ग) वे केवल आत्मप्रशंसा ही सुनना चाहते हैं
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती।
   कारण (R)–प्रतिभा के आगे समस्याएँ बड़ी हो जाती हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
5. **प्रबंधन के क्षेत्र में कैसे लोगों की आवश्यकता होती है–**
   (क) जो एक उपाय से सभी समस्याओं का समाधान कर सकें
   (ख) जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करते हैं
   (ग) जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग नियमों के पक्षधर होते हैं
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ग) 5. (क)।

(15) वर्तमान युग कंप्यूटर युग है। यदि भारतवर्ष पर नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने व्यवसाय हिसाब-किताब, रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं। अब भी यह कंप्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या कंप्यूटर आज की ज़रूरत है? इसका उत्तर है–कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है, किंतु इसके बिना आज की दुनिया अधूरी जान पड़ती है। सांसारिक गतिविधियों, परिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है।

पहले मनुष्य जीवन-भर में अगर सौ लोगों के संपर्क में आता था तो आज वह दो-हज़ार लोगों के संपर्क में आता है। पहले दिन में पाँच-दस लोगों से मिलता था तो आज पचास-सौ लोगों से मिलता है। पहले वह दिन में काम करता था तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं। आज व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं, व्यापार बढ़ रहे हैं, गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, साधन बढ़ रहे हैं। इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ़ लिया है।

कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है, जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर रामबाण औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की लंबी-लंबी गणनाएँ, कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कंप्यूटर की सहायता से काफ़ी सुविधा हो गई है।

1. **वर्तमान युग कंप्यूटर का युग क्यों है–**
   (क) कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है
   (ख) कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है
   (ग) कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गया है
   (घ) कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –यह कंप्यूटर के प्रारंभिक प्रयोग का युग है।
   कारण (R)–आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का युग होगा।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **गद्यांश के अनुसार, किस आवश्यकता ने कंप्यूटर में अपना निदान ढूँढ़ लिया है–**
   (क) अनियंत्रित कर्मचारियों को अनुशासित करने की
   (ख) अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की
   (ग) अधिक-से-अधिक लोगों से जुड़ जन-जागरण लाने की
   (घ) अधिक-से-अधिक कार्य कभी भी व कहीं भी करने की।

4. **कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था–**
(क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं
(ख) गलतियों के डर से कर्मचारी घबराए रहते थे
(ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था
(घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं।

5. **कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है; क्योंकि–**
(क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं
(ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है
(ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं
(घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है।

उत्तर– 1. (क) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(16) अपनी सभ्यता का जब मैं अवलोकन करता हूँ, तब लोगों के काम के संबंध की उनकी विचारधारा के अनुसार, उन्हें विभाजित करने लगता हूँ। एक वर्ग में वे लोग आते हैं, जो काम को उस घृणित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, जिसकी उनके लिए उपयोगिता केवल धन अर्जित करना है। वे अनुभव करते हैं कि जब दिनभर का श्रम समाप्त हो जाता है, तब वे जीना सचमुच शुरू करते हैं और अपने आप में होते हैं। अब वे काम में लगे होते हैं, तब उनका मन भटकता रहता है। काम को वे उतना महत्त्व देने का कभी विचार नहीं करते, क्योंकि केवल आमदनी के लिए ही उन्हें काम की आवश्यकता है। दूसरे वर्ग के लोग अपने काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के एक सुयोग के रूप में देखते हैं। वे धन इसलिए कमाना चाहते हैं, ताकि अपने काम में अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। जिस काम में वे संलग्न होते हैं, उसकी पूजा करते हैं।
पहले वर्ग में केवल वे लोग ही नहीं आते हैं, जो बहुत कठिन और अरुचिकर काम करते हैं। उसमें बहुत-से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं, जो वास्तव में कोई काम नहीं करते हैं। ये सभी धन को ऐसा कुछ समझते हैं, जो उन्हें काम करने के अभिशाप से बचाता है। इसके सिवाय कि उनका भाग्य अच्छा रहा है, वे अन्यथा उन कारखानों के मज़दूरों की तरह ही हैं, जो अपने दैनिक काम को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझते हैं। उनके लिए काम कोई घृणित वस्तु है और धन वांछनीय, क्योंकि काम से छुटकारा पाने के साधन का प्रतिनिधित्व यही धन करता है। यदि काम को वे टाल सकें और फिर भी धन प्राप्त हो जाए, तो खुशी से यही करेंगे।
जो लोग काम में अनुरक्त हैं तथा उसके प्रति समर्पित हैं, ऐसे कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक दूसरे वर्ग में सम्मिलित हैं। वस्तुओं को बनाने और खोजने में वे हमेशा दिलचस्पी रखते हैं। इसके अंतर्गत परंपरागत कारीगर भी आते हैं, जो किसी वस्तु को रूप देने में गर्व और आनंद का वास्तविक अनुभव करते हैं। अपनी मशीनों को ममत्वभरी सावधानी से चलाने और उनका रखरखाव करने वाले कुशल मिस्त्री और इंजीनियर इसी वर्ग से संबंधित हैं।

1. **लेखक ने लोगों का विभाजन किस आधार पर किया है–**
(क) धर्म के आधार पर
(ख) जाति के आधार पर
(ग) भाषा के आधार पर
(घ) कार्य के संबंध में उनकी विचारधारा के आधार पर।

2. **लेखक ने लोगों को कितने वर्गों में विभाजित किया है–**
(क) दो वर्गों में (ख) तीन वर्गों में
(ग) चार वर्गों में (घ) पाँच वर्गों में।

3. **पहले वर्ग में कौन लोग आते हैं–**
(क) जो कार्य को पूजा मानते हैं
(ख) जो कार्य को घृणित और धनार्जन का साधन मानते हैं
(ग) जो कार्य में संतोष का अनुभव करते हैं
(घ) जो कार्य से कभी जी नहीं चुराते।

4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–पहले वर्ग के लोग काम को कभी महत्त्व नहीं देते।
कारण (R)–उन्हें केवल आमदनी के लिए काम की आवश्यकता होती है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. **काम के प्रति अनुरक्त और समर्पित लोगों के वर्ग में सम्मिलित हैं–**
(क) कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक
(ख) परंपरागत कारीगर
(ग) कुशल मिस्त्री और इंजीनियर
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(17) मन के भावों के आदान-प्रदान के लिए केवल मनुष्य को ही वाणी का वरदान प्राप्त है। पशु-पक्षी अपने भावों को शारीरिक मुद्राओं और अन्य संकेतों द्वारा प्रकट करते हैं। वाणी के अनेक रूप हैं, जो भाषा या बोली कहलाते हैं। संसार में इस समय भाषा और बोली के तीन हज़ार से भी अधिक रूप प्रचलित हैं। प्रायः सभी स्वतंत्र देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। उनके साथ स्थानीय बोलियाँ भी हैं, जो भाषा का ही प्रादेशिक रूप हैं। सबसे अधिक सुगम, सरल और स्वाभाविक भाषा मातृभाषा कहलाती है। यह बालक को उसके परिवार से संस्कार के रूप में मिलती है। अन्य भाषाएँ अर्जित भाषाएँ होती हैं, जो अभ्यास द्वारा सीखी जाती हैं। अपने घर-परिवार, वर्ग, जाति और देश के मध्य विचारों के आदान-प्रदान के लिए सबसे सरल भाषा मातृभाषा ही है। अपनी मातृभाषा द्वारा जितनी सहजता से भाव व्यक्त किए जा सकते हैं, वैसी सहज-सामर्थ्य किसी अन्य अर्जित भाषा में नहीं होती। विदेशी शासक जब किसी देश को जीतकर अपने शासन में लेते हैं, तब वे सबसे पहले विजित देश की भाषा के स्थान पर अपनी भाषा को शासन की भाषा बनाते हैं। भाषा के माध्यम से विदेशी शासक अपनी सभ्यता और संस्कृति की छाप विजित देश पर छोड़ते हैं। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भाषा के प्रयोग के संबंध में सावधान रहना चाहिए। राष्ट्र की एकता और पारस्परिक सौहार्द को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए राष्ट्रभाषा की आवश्यकता में किसी को संदेह नहीं है।

1. **भावों के आदान-प्रदान के लिए वाणी का वरदान केवल किसे प्राप्त है–**
(क) पशुओं को (ख) मनुष्य को
(ग) पक्षियों को (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A) –संसार में भाषा-बोली के तीन हज़ार से अधिक रूप प्रचलित हैं।
कारण (R)–सभी स्वतंत्र देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **लेखक के अनुसार सबसे अधिक सुगम, सरल और स्वाभाविक भाषा कौन-सी होती है–**
(क) राष्ट्रभाषा (ख) मातृभाषा
(ग) प्रादेशिक भाषा (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. **लेखक के अनुसार अभ्यास द्वारा सीखी गई अन्य भाषाएँ क्या कहलाती हैं–**
   (क) मातृभाषा (ख) बोली
   (ग) अर्जित भाषा (घ) स्वभाषा।
5. **राष्ट्र की एकता और पारस्परिक सौहार्द को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु क्या आवश्यक है–**
   (क) अर्जित भाषा (ख) बोली
   (ग) राष्ट्रभाषा (घ) मातृभाषा।

उत्तर— 1. (ख) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ग)।

(18) हम इस देश में प्रजातंत्र की स्थापना कर चुके हैं, जिसका अर्थ है–व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धांतों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है, पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। इसीलिए हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छंदतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और संप्रदायों को स्वतंत्रतापूर्वक पनपने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को अपने में अभिन्न भाव से मिल जाने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को मिलने दिया और देश और विदेश से एकसूत्रता तलवार के ज़ोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की।

1. **हमारी संस्कृति का मूलाधार है–**
   (क) संघर्ष (ख) प्रजातंत्र की स्थापना
   (ग) अहिंसा (घ) स्वार्थ।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –व्यक्ति और समाज के बीच विरोध का आभास होता है।
   कारण (R)–व्यक्ति केवल अपनी उन्नति और विकास चाहता है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सहीं है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' यह कथन है–**
   (क) श्रुति का (ख) नीति का
   (ग) गांधीजी का (घ) प्रत्येक व्यक्ति का।
4. **समाज और समाज के बीच का विरोध मिट सकता है–**
   (क) नैतिक चेतना द्वारा (ख) त्याग द्वारा
   (ग) हिंसा द्वारा (घ) एकता द्वारा।
5. **हमने एकसूत्रता स्थापित की–**
   (क) त्याग और अहिंसा द्वारा (ख) प्रेम और सौहार्द द्वारा
   (ग) तलवार द्वारा (घ) उन्नति और विकास द्वारा।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख)।

(19) हमारे विशाल देश में हिमालय की अनंत हिमराशि ने जिन वारिधाराओं को जन्म दिया है, उनमें उत्तरार्ध को सींचने वाली गंगा और यमुना नाम की नदियाँ जीवन की धमनियों की तरह हमारे ऐतिहासिक चैतन्य की साक्षी रही हैं। उनकी गोद में हमारे पूर्वजों ने सभ्यता के प्रांगण में अनेक नए खेल खेले। उनके तटों पर जीवन का जो प्रवाह प्रचलित हुआ, वह आज तक जीवंत है। भारतभूमि हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं–यह एक सच्चाई हमारे रोम-रोम में बिंधी हुई है। नदियों की अंतर्वेदी में पनपने वाले आदियुग के जीवन पर हम अब जितना अधिक विचार करते हैं, हमको अपने विकास और वृद्धि की सनातन जड़ों का पृथ्वी के साथ संबंध उतना ही अधिक घनिष्ठ जान पड़ता है। जब तक भारतीय जाति का जीवन भारतभूमि के साथ मूलबद्ध है, जब तक हमारे सांस्कृतिक पर्वों पर लाखों मनुष्य नदियों और जलाशयों के तटों पर एकत्र होते हैं, जब तक देश के संकटों में बलिदान की भावना प्रत्येक मन में जागती है, जब तक एक देश के नागरिक के रूप में हमारी पहचान जीवित है, तब तक हमारे आंतरिक गठन और अस्तित्व को सकुशल समझना चाहिए।

1. **हमारे ऐतिहासिक चैतन्य का साक्षी कौन है–**
   (क) राम-कृष्ण (ख) गंगा-यमुना
   (ग) हिमालय (घ) बुद्ध-गांधी।
2. **हिमालय की अनंत हिमराशि ने किसे जन्म दिया–**
   (क) पेड़-पौधों को (ख) पशु-पक्षियों को
   (ग) वारिधाराओं को (घ) साधु-महात्माओं को।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –गंगा और यमुना नदियाँ जीवन की धमनियों की तरह हैं।
   कारण (R)–ये नदियाँ हमारे ऐतिहासिक चैतन्य की साक्षी रही हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
4. **हमारे रोम-रोम में कौन-सी सच्चाई बिंधी है–**
   (क) हम विश्व-विजेता हैं
   (ख) हम युद्ध प्रिय हैं
   (ग) भारतभूमि हमारी माता और हम उसके पुत्र हैं
   (घ) हमें किसी के प्रति मोह नहीं है।
5. **हमारा आंतरिक संगठन और अस्तित्व कब तक सुरक्षित है–**
   (क) जब तक हमारी नदियों पर लोगों की भीड़ है
   (ख) जब तक हमारे मन में बलिदान की भावना है
   (ग) जब तक एक देश के नागरिक के रूप में हमारी पहचान है
   (घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(20) ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं हैं, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं; बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है, जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ है। ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्त्व है, उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में

कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फ़र्क यह है कि जो सुखों का मूल्य चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं, उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः' जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है; क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे, मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई; क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी; क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं?

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –पानी में एक अमृत वाला तत्त्व होता है।
   कारण (R)–उस तत्त्व को वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका हो।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
2. **जिसका कंठ सूखा हो, ओंठ फटे हों, बदन पसीने से तर हो, वह पानी के किस तत्त्व को पहचानता है–**
   (क) स्वाद (ख) अमृत तत्त्व
   (ग) प्यास (घ) सुख।
3. **जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम क्या है–**
   (क) अमृत (ख) मौत
   (ग) स्वाद (घ) फूलों की छाँह।
4. **सबसे बड़ी ज़िंदगी कौन-सी होती है–**
   (क) सुख की ज़िंदगी (ख) साहस की ज़िंदगी
   (ग) आराम की ज़िंदगी (घ) परमार्थ की ज़िंदगी।
5. **तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं, इस बात की चिंता कौन नहीं करता–**
   (क) सुखी मनुष्य (ख) कायर मनुष्य
   (ग) आलसी मनुष्य (घ) साहसी मनुष्य।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ख) 5. (घ)।

(21) समय एक अमूल्य धन है। समय मनुष्य को बलवान् और निर्बल बनाता है। समय स्वाधीन है और उसके रथ के पहिए निरंतर गतिशील रहते हैं। वे कभी रुकना नहीं जानते। समय की यह गति मनुष्य को प्रभावित करती है। यदि यह कहा जाए कि समय का उतार-चढ़ाव ही मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन है तो अनुचित न होगा। समय ही शिशु को युवक, युवक को वृद्ध और वृद्ध को मृत्यु की गोद में ले जाता है; अतः मनुष्य जीवन के निर्माण, परिवर्तन एवं सुधार में सहायक होने के कारण समय उसके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। समय सच्चा एवं अमूल्य धन है। यह ईश्वरीय वरदान सबके लिए है। कोई भी इससे वंचित नहीं है। यह एक ऐसी पूँजी है, जो निर्धन और धनवान सभी के पास बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध है; अतः इस धन के उपयोग के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। समय प्रत्येक व्यक्ति को अवसर देता है। जो इसका उपयोग करता है, इस अमूल्य धन का अपव्यय एवं दुरुपयोग नहीं करता, वह मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं विधाता बनता है। इसके विपरीत, जो अवसर को हाथ से खो देता है अथवा इसे व्यर्थ ही नष्ट कर देता है, समय उसका सर्वनाश कर देता है। समय का सदुपयोग ही जीवन की सफलता का मूलमंत्र है। हम केवल प्राप्त क्षण का ही उपयोग कर सकते हैं। भविष्य में समय के सदुपयोग के विषय में सोचने वाला व्यक्ति सदा टाल-मटोल की प्रवृत्ति का अभ्यस्त हो जाता है और उसका 'आज' तो 'कल' में बदल जाता है और 'आने वाला कल' कभी-कभी 'न आने वाला कल' हो जाता है; अतः आज को कल पर छोड़ने की प्रवृत्ति समय का सदुपयोग करना नहीं कहलाती।

1. **प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–**
   (क) समय का सदुपयोग (ख) सुनहरा भविष्य
   (ग) आने वाला कल (घ) जीवन की सफलता।
2. **समय की गति मनुष्य-जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है–**
   (क) समय मनुष्य को बलवान और निर्बल बनाता है
   (ख) समय के रथ के पहिए निरंतर गतिशील रहते हैं
   (ग) समय का उतार-चढ़ाव ही मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन है
   (घ) उपर्युक्त सभी।
3. **समय को ईश्वरीय वरदान क्यों कहा गया है–**
   (क) समय सच्चा एवं अमूल्य धन है
   (ख) समय ऐसी पूँजी है, जो एकसमान रूप से निर्धन के पास भी है और धनवान के पास भी है
   (ग) समय प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर देता है
   (घ) समय जीवन की सफलता का मूलमंत्र है।
4. **'दुरुपयोग' शब्द का संधि-विच्छेद है–**
   (क) दुरु + उपयोग (ख) दु + उपयोग
   (ग) दुर् + उपयोग (घ) दुरुप + योग।
5. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –समय की गति मनुष्य को प्रभावित करती है।
   कारण (R)–समय का उतार-चढ़ाव मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— 1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ)।

(22) शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास करना है; जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षमताएँ सम्मिलित हैं। शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है, जिससे वह अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् परिपालन कर सके। बौद्धिक विकास से अभिप्राय केवल यह नहीं है कि शिक्षित व्यक्ति कुछ तथ्यों को जान लेता है, बल्कि यह है कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसा व्यवहार करता है, जो सुबुद्धि-विरोधी न हों। साहित्य और ललित कलाओं के प्रति अनुराग और उनके स्तर की पहचान को भी शिक्षित व्यक्ति का एक आवश्यक गुण समझा जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति वैचारिक स्तर पर भी ऊँचा उठ जाता है। उसका 'स्व' विस्तृत होता है; क्योंकि वह 'स्वहित' से अधिक परहित को महत्त्व देता है और देशहित के आगे सबकुछ निछावर कर सकता है। केवल साक्षर होना, पढ़-लिख लेना शिक्षित होना नहीं है। यदि हम विनम्र नहीं हैं, उदार और सहनशील नहीं हैं, देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानते तो हम डिग्रीधारी भले ही हों, शिक्षित कदापि नहीं कहलाएँगे।

1. **शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य क्या है–**
   (क) मनुष्य का शारीरिक विकास करना
   (ख) मानसिक विकास करना
   (ग) भावात्मक विकास करना
   (घ) सभी क्षमताओं का विकास करना।
2. **बौद्धिक विकास से लेखक का अभिप्राय है–**
   (क) स्वयं का ध्यान रखना
   (ख) दूसरों का ध्यान रखना
   (ग) कुछ तथ्यों को जान लेना
   (घ) सद्बुद्धि-विरोधी व्यवहार न होना।
3. **शिक्षित व्यक्ति की पहचान में सम्मिलित नहीं है–**
   (क) स्वार्थ का चिंतन करना
   (ख) साहित्य और ललित कलाओं से प्रेम करना
   (ग) वैचारिक स्तर का उच्च होना
   (घ) परहित और देशहित को महत्त्व देना।
4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है।
   कारण (R)–इससे वह अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् परिपालन कर सकता है।
   (क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
5. **कोई डिग्रीधारी भी कब शिक्षित नहीं कहलाता–**
   (क) जब वह विनम्र नहीं होता
   (ख) जब वह उदार और सहनशील नहीं होता
   (ग) जब वह देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानता
   (घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (घ) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ)।

(23) जनसाधारण की भलाई के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के कुछ ऐसे विज्ञापन दिए जाते हैं, जिनका लक्ष्य अच्छी सरकार, सामुदायिक विकास, वैज्ञानिक सफलताएँ, शिक्षा-सुधार, सार्वजनिक स्वास्थ्य, वन्य प्राणी-रक्षा, यातायात सुरक्षा तथा धार्मिक एकता को बनाए रखना होता है। इसके अतिरिक्त इनसे बाज़ारों में उपभोक्ता को उत्पाद-वस्तुओं के चयन में सहायता मिलती है। कृषि के क्षेत्र में किसानों को कीटनाशक औषधियों और उनके प्रयोग करने की जानकारी, परिवार-नियोजन तथा बच्चों को टीका लगाने की जानकारी आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापनों से मिल सकती है। समाज-कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का मुख्य लक्ष्य जनता में विवेक उत्पन्न करना, उसके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना, उसका सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास करना आदि रहा है। आधुनिक युग में विज्ञापन जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। उपभोक्ता को शिक्षित करना, उत्पादक को लाभ पहुँचाना, विक्रेता की सहायता करना, उत्पादक तथा उपभोक्ता के बीच मधुर संबंध स्थापित करना तथा लोक-सेवा करना विज्ञापन के प्रमुख कार्य हैं। इस प्रकार आज हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञापनमय हो गया है।

1. **प्रस्तुत गद्यांश में किसका वर्णन है–**
   (क) जीवन का (ख) धन का
   (ग) विज्ञापन का (घ) विज्ञान का।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –विज्ञापन उत्पाद वस्तुओं के चयन में सहायक हैं।
   कारण (R)–आज हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञापनमय हो गया है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **समाज-कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का लक्ष्य है–**
   (क) जनता में विवेक जगाना
   (ख) जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना
   (ग) जनता का सांस्कृतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास करना
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **'सामुदायिक' में प्रत्यय है–**
   (क) साम (ख) दायिक
   (ग) यिक (घ) इक।
5. **आज हमारा जीवन कैसा हो गया है–**
   (क) ज्ञानमय (ख) सुखमय
   (ग) विज्ञापनमय (घ) दुःखमय।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(24) प्रायः लोग मोह को बढ़ाकर, तृष्णा को उत्पन्नकर अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं। प्रभु तो उनकी सहायता करते हैं, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। आत्मनिर्भरता स्वावलंबियों की आराध्या देवी है। इस देवी-उपासना से उनका आलस्य अंतर्धान हो जाता है, डरकर भाग जाता है, कायरता नष्ट हो जाती है तथा संकोच समाप्त हो जाता है। आत्मविश्वास उत्पन्न होता है, आत्मगौरव जाग्रत होता है। स्वावलंबी व्यक्ति कष्टों और बाधाओं को रौंदता हुआ कंटकाकीर्ण पथ पर निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़ता है। स्वावलंबन मानव में गुणों की प्रतिष्ठा करता है। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्मनिर्भरता, आत्मरक्षा, साहस, संतोष, धैर्य आदि गुण स्वावलंबन के सहोदर हैं। ऐसे महान, प्रचंड, शक्तिसंपन्न, स्वावलंबी मनुष्य समाज तथा राष्ट्र का जीवन हैं। ऐसे व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र के लिए बल, गौरव एवं उन्नति के द्वार हैं। सुख, शांति तथा सफलता के प्रदाता हैं, आत्मनिर्भरता के परिचायक हैं, शौर्य, शक्ति तथा समृद्धि के साधन हैं। स्वावलंबन व्यक्ति, राष्ट्र तथा मानवमात्र के जीवन में सर्वांगीण प्राप्ति का महामंत्र है। जीवन का आभूषण है। कर्त्तव्य-शृंखला की प्रथम कड़ी है, वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है और सर्वांगीण उन्नति का आधार है।

1. **मोह और तृष्णा को बढ़ाकर लोग क्या करते हैं–**
   (क) धन कमाते हैं
   (ख) यश प्राप्त करते हैं
   (ग) अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं
   (घ) उन्नति कर लेते हैं।
2. **स्वावलंबियों की आराध्य देवी हैं–**
   (क) दुर्गा (ख) सरस्वती
   (ग) लक्ष्मी (घ) आत्मनिरर्भरता।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A) –प्रायः लोग मोह ओर तृष्णा से अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं।
कारण (R)–भगवान ऐसे लोगों की ही सहायता करते हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कगलत हैं।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **स्वावलंबन के सहोदर हैं–**
(क) आत्मसम्मान, आत्मविश्वास
(ख) आत्मबल, आत्मनिर्भरता, आत्मरक्षा
(ग) साहस, संतोष, धैर्य
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. **मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार है–**
(क) धन (ख) बल
(ग) मित्र (घ) स्वावलंबन।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ)।

(25) संस्कृति एक ऐसी चीज़ है, जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में वह सभ्यता से एक भिन्न गुण है। अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज़ है, जो हमारे पास है; संस्कृति वह गुण है, जो हममें व्याप्त है। मोटर, महल, सड़क, हवाईजहाज़, पोशाक और अच्छा भोजन, ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएँ संस्कृति नहीं, सभ्यता के सामान हैं। मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है, वह संस्कृति की चीज़ है। इसी प्रकार मोटर बनाने और उसका उपयोग करने, महलों के निर्माण में रुचि का परिचय देने और सड़कों तथा हवाईजहाज़ों की रचना में जो ज्ञान लगता है, उसे अर्जित करने में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है। हर सुसभ्य आदमी संस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और तबीयत से नंगा होना संस्कृति के खिलाफ़ बात है और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर संस्कृत आदमी सभ्य ही होता है; क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट-बाट है, मगर बहुत-से ऐसे लोग हैं, जो सड़े-गले झोपड़ों में रहते हैं, जिनके पास काफ़ी कपड़े भी नहीं होते और न कपड़े पहनने के अच्छे ढंग ही उन्हें मालूम होते हैं, लेकिन फिर भी उनमें विनय और सदाचार होता है, वे दूसरे के दुःख से दुःखी होते हैं तथा दूसरों का दुःख दूर करने के लिए वे ख़ुद मुसीबत उठाने को तैयार रहते हैं।

1. **लक्षणों से जान सकने पर भी हम किसकी परिभाषा नहीं दे सकते–**
(क) सभ्यता की (ख) संस्कृति की
(ग) संस्कृत की (घ) सदाचार की।

2. **संस्कृति की चीज़ नहीं है–**
(क) अच्छा भोजन (ख) पोशाक पहनना
(ग) भोजन करने की कला (घ) मोटर का उपयोग करना।

3. **संस्कृति के खिलाफ़ बात है–**
(क) अच्छे ढंग से कपड़े न पहनना
(ख) दूसरों के दुःख से दुःखी होना
(ग) अच्छी पोशाक पहनना
(घ) तबीयत से नंगा होना।

4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A) –संस्कृत को लक्षणों से जान सकते हैं।
कारण (R)–संस्कृति को परिभाषित भी किया जा सकता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. **'चरित्रवान्' के अर्थ में किस शब्द का प्रयोग हुआ है–**
(क) सुसभ्य का (ख) संस्कृत का
(ग) संस्कृति का (घ) सभ्यता का।

उत्तर— 1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ख)।

(26) उपयोगिता का धरातल वह धरातल है, जिस पर मनुष्य और पशु दोनों समान हैं। आहार, निद्रा, भय और मैथुन पशुओं का भी धर्म हैं और मनुष्य का भी। मनुष्य और पशु में मुख्य भेद यह है कि मनुष्य ज्यों-ज्यों सुसंस्कृत होता है, त्यों-त्यों वह अनुपयोगी कार्य अधिक करता जाता है। महलों में उसे खिड़कियाँ चाहिए और खिड़कियों में ख़ूब महीन पर्दे, जो स्वप्न के समान झूलते हों। इनका शायद कुछ उपयोग माना भी जा सके, किंतु दीवार पर चित्र टाँगने का क्या उपयोग है? नाचने, गाने, मूर्ति बनाने और शरीर को प्रसाधन से सज्जित करने का क्या उपयोग है? यह भी ध्यान देने की बात है कि प्रेम की निराशा से आहत होकर पशु आत्महत्या नहीं करते, आत्महत्या केवल मनुष्य करता है। पशु केवल उतने ही कर्म करते हैं, जितने से उनकी जैविक आवश्यकता की पूर्ति हो जाए, किंतु मनुष्य की मनुष्यता तो तब तक आरंभ ही नहीं होती, जब तक वह केवल अपनी जैविक आवश्यकता की पूर्ति में संलग्न है।
अर्थात् श्रेष्ठ साहित्य वह नहीं है, जिसका जीवन में कोई प्रत्यक्ष उपयोग है। श्रेष्ठ साहित्य हम उसे कहेंगे, जो सभी उपयोग की सीमा के पार जन्म लेता है, जिसकी आवाज़ हम शिखर की उस ऊँचाई से सुनते हैं, जो कर्म की तलहटी से दूर है, जो उपयोग की सभी सीमाओं से परे है और जहाँ पहुँचने के लिए तर्कों के सोपान नहीं बनाए जा सकते।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A) –उपयोगिता के धरातल पर मनुष्य और पशु दोनों समान हैं।
कारण (R)–पशु आत्महत्या नहीं करते, मनुष्य आत्महत्या करता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **मनुष्य सुसंस्कृत होने के साथ-साथ कैसा कार्य अधिक करता है–**
(क) धार्मिक (ख) सामाजिक
(ग) उपयोगी (घ) अनुपयोगी।

3. **मनुष्य और पशु में कौन-सी बात समान है–**
(क) आहार (ख) निद्रा
(ग) भय और मैथुन (घ) ये सभी।

4. **श्रेष्ठ साहित्य वह है–**
   (क) जो कर्म की तलहटी से दूर है
   (ख) जो उपयोग की सभी सीमाओं से परे है
   (ग) जिसकी आवाज़ हम शिखर की ऊँचाई से सुनते हैं
   (घ) उपर्युक्त सभी।
5. **'मनुष्यता' कौन-सी संज्ञा है–**
   (क) जातिवाचक (ख) भाववाचक
   (ग) व्यक्तिवाचक (घ) समूहवाचक।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ख)।

(27) मैंने घूमना शुरू किया। मुझे निरामिष अर्थात् अन्नाहार देने वाले भोजनगृह की खोज करनी थी। घर की मालकिन ने भी कहा था कि खास लंदन में ऐसे गृह मौजूद हैं। मैं रोज़ दस-बारह मील चलता था। किसी मामूली-से भोजनगृह में जाकर पेटभर रोटी खा लेता था, पर उससे संतोष न होता था। इस तरह भटकता हुआ एक दिन मैं फैरिंग्टन स्ट्रीट पहुँचा और वहाँ 'वेजिटेरियन रेस्टरां' (अन्नाहारी भोजनालय) का नाम पढ़ा। मुझे वह आनंद हुआ, जो बालक को मनचाही चीज़ मिलने से होता है। हर्ष-विभोर होकर अंदर घुसने से पहले मैंने दरवाज़े के पास की शीशे वाली खिड़की में बिक्री की पुस्तकें देखीं। उनमें मुझे सॉल्ट की 'अन्नाहार की हिमायत' नामक पुस्तक दिखी। एक शिलिंग में मैंने वह खरीद ली और फिर भोजन करने बैठा। विलायत आने के बाद यहाँ पहली बार भरपेट भोजन मिला। ईश्वर ने मेरी भूख मिटाई।

सॉल्ट की पुस्तक पढ़ी। मुझ पर उसकी अच्छी छाप पड़ी। इस पुस्तक को पढ़ने के दिन से मैं स्वेच्छापूर्वक अर्थात् विचारपूर्वक अन्नाहार में विश्वास करने लगा। माता के निकट की गई प्रतिज्ञा अब मुझे विशेष आनंद देने लगी और जिस तरह अब तक मैं यह मानता था कि सब मांसाहारी बनें तो अच्छा हो, और पहले केवल सत्य की रक्षा के लिए तथा बाद में प्रतिज्ञापालन के लिए ही मैं मांस-त्याग करता था और भविष्य में किसी दिन स्वयं आज़ादी से प्रकट रूप में, मांस खाकर दूसरों को खाने वालों के दल में सम्मिलित करने की उमंग रखता था, उसी तरह अब स्वयं अन्नाहारी रहकर दूसरों को वैसा बनाने का लोभ मुझ में जागा।

1. **लेखक को लंदन में किसकी तलाश थी–**
   (क) अच्छे विद्यालय की (ख) अच्छे विश्रामगृह की
   (ग) अन्नाहार भोजनालय की (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **अन्नाहारी भोजनालय मिलने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ–**
   (क) जैसे ख़जाना मिल गया हो
   (ख) जैसे बालक को मनचाही चीज़ मिल गई हो
   (ग) जैसे प्यासे को पानी मिल गया हो
   (घ) जैसे यात्री को मंजिल मिल गई हो।
3. **साल्ट की पुस्तक का क्या नाम था–**
   (क) 'अन्नाहार के लाभ'
   (ख) 'मांसाहार का महत्त्व'
   (ग) 'अन्नाहार की हिमायत'
   (घ) 'अन्नाहार और मांसाहार'।
4. **साल्ट की पुस्तक का लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा–**
   (क) वह मांसाहारी बन गया
   (ख) वह स्वेच्छापूर्वक अन्नाहार में विश्वास करने लगा
   (ग) वह एक लेखक बन गया
   (घ) उसका अन्नाहार से विश्वास उठ गया।
5. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) – मैं किसी मामूली-से भोजनगृह में भोजन करता था।
   कारण (R)– मुझे उससे संतोष नहीं होता था।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख) 5. (घ)।

(28) चीन के महान दार्शनिक संत ताओ बू बीन के पास चुंगसिन नामक एक व्यक्ति पहुँचा, उसने उनसे धर्म की शिक्षा देने की प्रार्थना की, संत ताओ बू ने उस व्यक्ति को कुछ समय तक अपने पास रखा और उसे दीन-दुःखियों की सेवा में लगा दिया। कुछ समय बाद चुंगसिन ने संत जी से निवेदन किया, "महाराज इतने दिन हो गए, आपने मुझे धर्म की शिक्षा नहीं दी। संत ने कहा, तेरा तो जीवन ही धर्ममय हो गया है, फिर मैं धर्म के विषय में तुझे क्या बताता? तू अपने कर्त्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करता है, तुझसे बड़ा धार्मिक कौन होगा?" चुंगसिन समझ गया, आप भी समझ गए होंगे कि कर्त्तव्य का पालन ही जीवन में सर्वोपरि है, चाहे तो हम उसे मानव का परम धर्म कह सकते हैं।

हमारे युवा-पाठकों में प्रायः प्रत्येक किसी-न-किसी परीक्षा के लिए तैयारी का संकल्प किए हुए है। क्या आपमें प्रत्येक को विश्वास है कि वह पूरी निष्ठा के साथ परीक्षा या प्रतियोगिता के संदर्भ में अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा/रही है? परीक्षा की तैयारी के अतिरिक्त आपके लिए अन्य कोई कार्यक्रम महत्त्व नहीं रखता है, कुछ ऐसे छात्र-छात्राएँ देखने में आते हैं, जो घर से पढ़ने के लिए कॉलेज आते हैं, परंतु वे कक्षाओं में न जाकर मटरगश्ती करते हैं अथवा कैंटीन में बैठकर दोस्तों के साथ बातें करते हैं। तब क्या वे अपने कर्त्तव्य की अवहेलना एवं माता-पिता के साथ विश्वासघात नहीं करते हैं? हम चाहते हैं कि हमारे युवा-पाठक शांतचित्त से विचार करके देखें कि वे उक्त श्रेणी के अनुत्तरदायी वर्ग के अंतर्गत तो नहीं आते हैं। परीक्षा एवं प्रतियोगिता में असफल होने के मूल में प्रायः हमारे युवा-वर्ग द्वारा पूरी तरह से अपने कर्त्तव्य का पालन न करना होता है, वे यदि अपने कर्त्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करें तो हम पूरी दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि उनकी सफलता की संभावनाएँ कई गुना बढ़ जाएँगी। कर्त्तव्यपालन के संदर्भ में यह नहीं सोचना चाहिए कि यदि सफलता नहीं मिलती है तो क्या होगा? कर्त्तव्यपालन को लक्ष्य करके हमारे मन-मस्तिष्क में एक ही विचार रहना चाहिए कि मैं इसका सम्यक् निर्वाह एवं पालन किस प्रकार कर सकता हूँ।

1. **संत ताओ बू बीन कहाँ के रहने वाले थे–**
   (क) जापान के (ख) चीन के
   (ग) भूटान के (घ) दक्षिण कोरिया के।
2. **संत ताओ बू बीन के पास कौन पहुँचा–**
   (क) एक किसान (ख) एक व्यापारी
   (ग) चुंगसिन नामक व्यक्ति (घ) एक नेता।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) – कर्त्तव्य का पालन ही जीवन में सर्वोपरि है।
   कारण (R)– कर्त्तव्य मानव का परमधर्म है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. जीवन में क्या सर्वोपरि है–
(क) धनार्जन (ख) ज्ञानार्जन
(ग) कर्त्तव्यपालन (घ) पूजा-पाठ।

5. कर्त्तव्यपालन के संदर्भ में क्या सोचना चाहिए–
(क) इसका क्या लाभ होगा?
(ख) यदि सफलता न मिली तो क्या होगा?
(ग) इसका सम्यक् निर्वाह कैसे कर सकता हूँ?
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)।

(29) भारत की विशेषता यह है कि वह समस्त संसार की लड़ाई लड़ रहा है। जबसे विज्ञान की बढ़ती हुई, प्रायः सभी देशों में अतीत और वर्तमान के बीच संघर्ष छिड़ गया और प्रायः सभी देशों में अतीत वर्तमान से हार गया। केवल भारत में वह आज भी ज़ोरों से युद्ध कर रहा है और संसार, जो भारत की ओर एक अस्पष्ट आशा से देख रहा है, उसका भी कारण भारत की अतीतप्रियता ही है। नए ज्ञान के प्रति भारत हमेशा ही उदार रहा है। नए धर्मों, नई संस्कृतियों और नई विचारधाराओं को अपनाकर भारत भी परिवर्तित होता रहा है; लेकिन विचित्रता की बात यह है कि भारत जितना ही बदलता है, उतना ही वह अपने आत्मस्वरूप के अधिक समीप पहुँच जाता है। यही विलक्षणता भारत का अपना गुण है और इसी गुण के कारण भारत से लोग यह आशा लगाए बैठे हैं कि आधुनिकता को अपना लेने के बाद भी भारत, भारत रहेगा और संसार के सामने एक नया नमूना पेश करेगा। सृष्टि-बोध की आधुनिक कल्पना उस कल्पना से भिन्न है, जो प्राचीन भारत में रही थी अथवा जो सारे प्राचीन विश्व में थी। आधुनिक कल्पना यह है कि सृष्टि अपने नियमों से आप चालित है और उन्हीं नियमों के परिणामस्वरूप धरती पर पेड़, पौधे, जीव और मनुष्य उत्पन्न हुए हैं। मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ है, वह प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने के लिए उससे संघर्ष कर रहा है। बाधाएँ तो उसके सामने बहुत आती हैं, मगर सफलता पाने में उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाता है।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –संसार भारत की ओर एक अस्पष्ट आशा से देख रहा है।
कारण (R)–भारत अपने अतीत से प्रेम करने वाला रहा है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. भारत में कौन ज़ोरों से युद्ध कर रहा है–
(क) किसान (ख) मज़दूर
(ग) सैनिक (घ) अतीत।

3. भारत हमेशा किसके प्रति उदार रहा है–
(क) दीन-दुःखियों के प्रति (ख) विदेशियों के प्रति
(ग) नए ज्ञान के प्रति (घ) आतंकियों के प्रति।

4. अतीत और वर्तमान के बीच छिड़े संघर्ष का क्या कारण है–
(क) धर्म का प्रचार (ख) विज्ञान का ह्रास
(ग) विज्ञान की बढ़ोतरी (घ) ये सभी।

5. मनुष्य किस बात के लिए संघर्ष कर रहा है–
(क) धन प्राप्ति के लिए
(ख) प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने के लिए
(ग) प्रकृति को अपने बश में करने के लिए
(घ) विश्व-विजेता बनने के लिए।

उत्तर— 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ख)।

(30) नया मनुष्य अपने भाग्य में नहीं, बाहुबल और बुद्धि में विश्वास करता है और वह यह मनसूबा रखता है कि वह अपनी योग्यता के अनुसार, ऊँची-से-ऊँची जगहों तक जा सकता है। नया आदमी यह भी नहीं मानता कि राजगद्दी मनुष्य ईश्वर की कृपा से प्राप्त करता है। यह समझता है कि देश में डिक्टेटर पैदा हो जाए तो उसका तख़्ता वह उलट सकता है, समाज में शोषक बढ़ जाएँ तो उनकी नींवें वह हिला सकता है; क्योंकि यहाँ जो कुछ भी है, मनुष्य के साहस, श्रम और बुद्धि के अधीन है और अदृश्य का हस्तक्षेप कहीं नहीं है।
नए मनुष्य की सृष्टि-संबंधी जो कल्पना है, वह प्राचीन जगत् की कल्पना से भले ही भिन्न हो, किंतु जहाँ तक आदमी के कर्त्तव्य और सदाचार की बात है, प्राचीन जगत् की कल्पना उसमें कोई खलल नहीं डालती। प्राचीन जगत् की कल्पना मनुष्य के कर्त्तव्यभाव को कुंठित नहीं करती, उसके उल्लास को नहीं दबाती, न उसे यह सिखलाती है कि जो कुछ मिलने वाला है, वह तुम्हें ईश्वर से नहीं मिलेगा; अतएव तुम हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहो। जो लोग हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे हुए हैं, उनसे पूछिए कि क्या वे ईश्वर के भरोसे बैठे हुए हैं? उत्तर मिलेगा, नहीं सिर्फ़ इसलिए कि हमारे पास साधन नहीं हैं, उद्यम की शक्ति नहीं है। अब उद्यम और साधन का नहीं होना, भाग्य के भरोसे बैठे रहने का परिणाम है अथवा किन्हीं अन्य कारणों का, इसका निर्णय आसानी से नहीं किया जा सकता। प्राचीन विश्व निरुद्यमी लोगों का विश्व नहीं था। अगर वह निरुद्यमियों और भाग्यवादियों का संसार हुआ होता तो जिन लोगों ने उस समय बड़े-बड़े काम किए, उनका आविर्भाव ही नहीं होता। भाग्य के विरुद्ध पुरुषार्थ की महिमा आदमी को कोई आज ही ज्ञात नहीं हुई है।

1. नया मुनष्य किसमें विश्वास करता है–
(क) अपने भाग्य में (ख) धर्म में
(ग) बाहुबल और बुद्धि में (घ) धनार्जन में।

2. प्राचीन जगत् की कल्पना क्या नहीं करती–
(क) आदमी के कर्त्तव्य और सदाचार में खलल नहीं डालती
(ख) आदमी के कर्त्तव्यभाव को कुंठित नहीं करती
(ग) आदमी के उल्लास को नहीं दबाती
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. लोग हाथ-पर-हाथ धरे बैठने का क्या कारण बताते हैं–
(क) काम करने की इच्छा न होना
(ख) ईश्वर पर भरोसा होना
(ग) साधन और उद्यम शक्ति का अभाव होना
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –नया मनुष्य भाग्य में नहीं, बुद्धि और बाहुबल में विश्वास रखता है।
कारण (R)–वह अपनी इच्छा से ऊँची-से-ऊँची जगह पहुँचना चाहता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

5. 'मनसूबा' शब्द है–
(क) तत्सम (ख) तद्भव
(ग) देशज (घ) विदेशी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(31) मान लीजिए सब सुख-ही-सुख होता, दुःख का कोई नाम तक न जानता होता तो इस संसार की क्या दशा होती। मैं समझता हूँ, तब यह दृश्य जगत् संसार इस नाम से कभी न कहा जाता; क्योंकि संसार तो उसे ही कहा जा सकता है, जो सदा एकरूप न रहे। 'संसार सम् उपसर्गपूर्वक सृ धातु से बना है, जिसके माने चलने के हैं।' जब सुख के सब कारण एक जगह आकर जड़वत् हो गए तो फिर इसमें रह ही क्या गया, बल्कि तब तो यह संसार उससे अधिक फीका होगा, जितना दुःखी को दुःख की दशा में बोध होता है। दूसरे दुःख ही मनुष्य को उभारने वाला है और अपने में उभारने की इच्छा ही से मनुष्य दुःख उठाकर भी उससे परे होने की अभिलाषा रखता है। दुःख को बरकाना या उसे कम करने का ही नाम भाँति-भाँति की तरक्की और उन्नति है। बड़े-बड़े सभ्य देश और जाति, जो आज उन्नति के शिखर पर हैं, पहले अत्यंत क्लेश और दुःख झेलकर उन्नति की इस चरमसीमा तक पहुँचे हैं। बिना क्लेश उठा सुख और ख्याति तो कभी मिलती ही नहीं, इसलिए सुख का हेतु भी हम दुःख ही मानेंगे। यदि सिंह आदि शिकारी जानवरों को अधिक भूख न होती और साधारण पशुओं के समान केवल घास-पात से पेट भरकर वे भी संतुष्ट रहते तो क्या वे इतने मज़बूत होते और यदि हिरन-खरगोश आदि जीवों को सिंह आदि शिकारी जानवरों से भय न रहता तो वे क्या इतने तेज़ वेगगामी होते। यदि भूख का दुःख न होता तो अमृत-समान भाँति-भाँति के सुस्वादु भोजन का सुख हम क्या जानते।

1. संसार किसे कहा जाता है–
(क) जो दिखाई दे (ख) जो दिखाई न दे
(ग) जो एकरूप रहे (घ) जो सदा एकरूप न रहे।

2. 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'सृ' धातु से बने 'संसार' शब्द का क्या अर्थ है–
(क) चलना (ख) टूटना
(ग) नष्ट होना (घ) बनना।

3. भाँति-भाँति की तरक्की किसका नाम है–
(क) सुख बढ़ाने का (ख) दुःख बढ़ाने का
(ग) दुःख को कम करने का (घ) सुख भोगने का।

4. सुस्वादु भोजन का सुख प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है–
(क) परिश्रम करना (ख) अच्छा भोजन बनाना
(ग) भूख का दुःख सहन करना (घ) धन अर्जित करना।

5. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –कष्ट उठाए बिना सुख और ख्याति नहीं मिलती।
कारण (R)–सुख का हेतु भी दुःख को माना जाता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर— 1. (घ) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)।

(32) आधा अधूरा ज्ञानी अपनी विद्वत्ता का अधिक प्रदर्शन करता है। व्यावसायिक जगत् में प्रायः ऐसे विद्वानों के उदाहरण मिलते हैं, जिनमें ज्ञान, सामर्थ्य, धन, शक्ति आदि का अभाव होता है, परंतु उनमें दिखावे और अहंकार की भावना अधिक होती है। ऐसी विशेषताओं वाले व्यक्ति अपने को ऊँचा और महान दिखाने के लिए ज़ोर-शोर से अपने गुणों का प्रचार करते रहते हैं, परंतु जब कुछ कर दिखाने का समय आता है, तो सबसे पीछे खड़े होते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में अपनी छवि उस 'थोथे चने' की भाँति बना लेते हैं, जो घना बजता ही रहता है। अधूरा ज्ञानी अपनी हीनता का भाव छिपाने के लिए बार-बार ज्ञान का दंभ भरता है और समाज में उपहास का पात्र बनता है, जबकि जो पूर्णरूप से ज्ञानी और सामर्थ्यवान् है, वह नम्र और संतुलित व्यवहार करता है। उसके व्यवहार से कहीं भी अहंकार का भाव नहीं झलकता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि फल से युक्त वृक्षों की डालियाँ झुकी ही रहती हैं।

1. अपनी विद्वत्ता का अधिक प्रदर्शन कौन करता है–
(क) पूर्णज्ञानी (ख) पूर्ण अज्ञानी
(ग) आधा-अधूरा ज्ञानी (घ) ये सभी।

2. अज्ञानी स्वयं को महान दिखाने के लिए क्या करता है–
(क) अवगुणों को छिपाता है
(ख) ज़ोर-शोर से अपने गुणों का प्रचार करता है
(ग) आडंबर करता है
(घ) धन का दुरुपयोग करता है।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A) –आधा अधूरा ज्ञानी अपनी विद्वत्ता का अधिक प्रदर्शन करता है।
कारण (R)–उसमें दिखावें और अहंकार की भावना नहीं होती।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. हीनता का भाव छिपाने के लिए अज्ञानी क्या करता है–
(क) अधिक बोलता है
(ख) बिलकुल चुप रहता है
(ग) बार-बार ज्ञान का दंभ भरता है
(घ) दूसरों पर दोषारोपण करता है।

5. पूर्णज्ञानी कैसा व्यवहार करता है–
(क) अशिष्टता पूर्ण (ख) नम्र और संतुलित
(ग) आडंबरयुक्त (घ) कठोर और शुष्क।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ख)।

(33) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ से जब पूछा गया कि आपकी शहनाई में बनारस कितना मौजूद है? उनका जवाब था, "हमने कुछ नहीं पैदा किया है। जो हो गया, वह उसका करम है। हाँ, जो लेकर हम चले हैं, अपनी शहनाई में वह बनारस का अंग है। किसी भी चीज़ में जल्दबाज़ी नहीं करते बनारसवाले। बड़े इत्मीनान से बोल लेकर चलते हैं। एक महाराज जी थे, वे बाला जी घाट के पास मंदिर में रोज़ सुबह की आरती में करीब साढ़े चार-पाँच बजे बड़ा सुंदर पद गाते थे–'किरपा करो महाराज मो पे।' हम रियाज़ के लिए जाएँ वहाँ तो रोज़ सुनते थे। फिर ठीक वही बंदिश, जब वह गाकर बंद करें, तब हम अपनी शहनाई से निकालते थे तो वही ठेठपन आया हमारे बजाने में। मंदिर का घंटा-घड़ियाल भी कानों में पड़ता था और गंगा-पुजैया का विवाह, सेहरा भी गज़ब जान पड़ता था। हम आज भी जितना कर पाते हैं, वो सब यही बनारस की देन है —— सबकी अपनी-अपनी खूबी और चलन-बढ़त का अलग-अलग अंदाज़ होता है, अब जब हम ज़िंदगीभर यहीं मंगला-गौरी और पक्का महल में रियाज़ करते जवान हुए हों तो कहीं-न-कहीं से बनारस का शहद तो टपकेगा ही हमारी शहनाई में।"

1. **बिस्मिल्ला खाँ कौन थे–**
   (क) प्रसिद्ध गायक (ख) तबलावादक
   (ग) शहनाईवादक (घ) सितारवादक।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –बनारस वाले किसी चीज़ में जल्दबाज़ी नहीं करते।
   कारण (R)–वे बड़े इत्मीनान से बोल लेकर चलते हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **बनारसवालों की क्या विशेषता है–**
   (क) मीठा बोलते हैं
   (ख) कड़वा बोलते हैं
   (ग) किसी चीज़ में जल्दबाज़ी नहीं करते
   (घ) हर काम में जल्दबाज़ी करते हैं।
4. **बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में बनारस कितना मौजूद है–**
   (क) पूर्णरूप से (ख) थोड़ा-सा
   (ग) बिलकुल भी नहीं (घ) आधा।
5. **'पक्का महल' में 'पक्का' शब्द क्या है–**
   (क) संज्ञा (ख) सर्वनाम
   (ग) विशेषण (घ) उपसर्ग।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)।

(34) काशी के सेठ गंगादास एक दिन गंगा में स्नान कर रहे थे कि तभी एक व्यक्ति नदी में कूदा और डुबकियाँ खाने लगा। सेठ जी तेज़ी से तैरते हुए उसके पास पहुँचे और किसी तरह खींचकर उसे किनारे ले आए। वह उनका मुनीम नंदलाल था। उन्होंने पूछा, "आपको किसने गंगा में फेंका?" नंदलाल बोला, "किसी ने नहीं, मैं तो आत्महत्या करना चाहता था।" सेठ जी ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, "मैंने आपके पाँच हज़ार रुपये चुराकर सट्टे में लगाए और हार गया। मैंने सोचा कि आप मुझे जेल भिजवा देंगे। इसलिए बदनामी के डर से मैंने मर जाना ही ठीक समझा।" कुछ देर तक सोचने के बाद सेठ जी ने कहा, "तुम्हारा अपराध माफ़ किया जा सकता है, लेकिन एक शर्त है कि आज से कभी किसी प्रकार का सट्टा नहीं लगाओगे।" नंदलाल ने वचन दिया कि वह अब ऐसे काम नहीं करेगा। सेठ ने कहा, "जाओ माफ़ किया। पाँच हज़ार रुपये मेरे नाम घरेलू ख़र्च में डाल देना।" सेठ ने कहा, "तुम चोर नहीं हो। तुमने एक भूल की है, चोरी नहीं। जो आदमी अपनी एक भूल के लिए मरने तक की बात सोच ले, वह कभी चोर नहीं हो सकता।"

1. **गंगा में कूदने वाला व्यक्ति कौन था–**
   (क) एक किसान (ख) एक महात्मा
   (ग) मुनीम नंदलाल (घ) एक पुजारी।
2. **मुनीम गंगा में क्यों कूदा–**
   (क) नहाने के लिए (ख) गरमी दूर करने के लिए
   (ग) पाप धोने के लिए (घ) आत्महत्या करने के लिए।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –मुनीम आत्महत्या करना चाहता था।
   कारण (R)–वह गरीबी से दुःखी था।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं। सही
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **मुनीम ने कितने रुपये चुराए थे–**
   (क) दो हज़ार (ख) तीन हज़ार
   (ग) चार हज़ार (घ) पाँच हज़ार।
5. **सेठ ने मुनीम को किस शर्त पर माफ़ किया–**
   (क) कभी झूठ न बोलने की (ख) कभी सट्टा न लगाने की
   (ग) कभी चोरी न करने की (घ) कभी गंगा में न नहाने की

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ख)।

(35) माँ का एक बार का प्रोत्साहन पुत्र के लिए जैसा उपकारी और उसके चित्त में असर पैदा करने वाला होता है, वैसा पिता की सौ बार की नसीहत और ताड़ना भी नहीं होती। सौतेली माँ सुरुचि के वज्रपात सदृश वाक्-प्रहार से ताड़ित और पिता की अवज्ञा और निरादर से अत्यंत संतापित ध्रुव को, जब वह केवल पाँच ही वर्ष के बालक थे, सुनीति देवी का एक बार का प्रोत्साहन उनके लिए ध्रुवपद की प्राप्ति का हेतु हुआ, जिसके समान उच्च और स्थिर पद आज तक किसी को मिला ही नहीं। पिता का स्नेह बदला चुकाने की इच्छा से होता है। वह पुत्र को इसीलिए पालता-पोसता और पढ़ाता-लिखाता है कि बुढ़ापे में वह हमारे काम आएगा तथा जब हम सब भाँति अपाहिज और अपंग हो जाएँगे तो हमारी सेवा करेगा और हमारे अन्न-वस्त्र की फ़िक्र रखेगा, पर माँ का उदार और अकृत्रिम प्रेम इन सब बातों की कभी इच्छा नहीं रखता। माँ अपनी प्रिय संतान के लिए कितना कष्ट सहती है, जिसे यादकर चित्त में वात्सल्यभाव का उद्‌गार हो आता है। माँ में पिता के समान प्रत्युपकार की वासना भी नहीं है, दया मानो देह धरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। टूटी फूस की मढ़ी में, जबकि मूसलाधार अखंड पानी बरस रहा है और फूस का ठाठ सब ओर से ऐसा टपकता है कि कहीं बीता-भर जगह बची नहीं है, न गरीबी के कारण इतना कपड़ा-लत्ता पास है कि आप भी ओढ़े और प्रिय संतान को ढाँपकर वृष्टि के भयंकर उत्पात से बचाए, माता आधी धोती ओढ़े, आधी से अपने दुधमुँहे बालक को ढाँपे उसको छाती से लगाए हुए है। अपने प्राण और देह की उसे तनिक भी चिंता नहीं है, किंतु वात और वृष्टि से पुत्र को कोई अनिष्ट न हो, इसलिए वह अत्यंत व्यग्र हो रही है। पुत्र की रोगी और अस्वस्थ दशा में पलंग के पास बैठी उदासीन मन मारे वह उसका मुँह ताक रही है। रात की नींद और दिन का भोजन उसे मुहाल हो गया है। भाँति-भाँति की मान-मनौती तथा उतारा और सदके में वह लगी है। जो जौन कहता है, वह सबकुछ करती जाती है। अपनी जान तक चाहे चली जाए, पर पुत्र को स्वस्थता हो, इसी की फ़िक्र में वह है।

1. **बालक पर किसका प्रभाव अधिक पड़ता है–**
   (क) माता का (ख) पिता का
   (ग) गुरु का (घ) मित्र का।
2. **किसका प्रोत्साहन बालक ध्रुव के लिए ध्रुवपद की प्राप्ति का हेतु बना–**
   (क) पिता का (ख) माता सुनीति का
   (ग) सौतेली माता सुरुचि का (घ) अपने गुरु का।
3. **पिता के स्नेह में क्या होता है–**
   (क) बदला चुकाने की इच्छा (ख) परमार्थ की भावना
   (ग) कर्त्तव्य की भावना (घ) उदारता की भावना।
4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –पिता का स्नेह बदला चुकाने की इच्छा से होता है।
   कारण (R)–वह पुत्र को बुढ़ापे के सहारे के लिए पालता-पोसता है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

5. माँ की व्यग्रता का कारण क्या होता है–

(क) पुत्र का अनिष्ट न हो

(ख) पुत्र का कल्याण हो

(ग) पुत्र सुखी रहे

(घ) पुत्र दीर्घायु हो।

उत्तर— 1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)।

(36) नौका विजय-गर्व से नदी की लहरों पर दौड़ती चली जाती है और पानी उसकी 'जय-जयकार' करता हुआ उसे अपने हाथों पर उठाए रहता है, किंतु जब वह डूबती है तो अपने ही छोटे-से छेद के कारण, जो धीरे-धीरे कब्र हो गया, वह भी अपनी लापरवाही से नहीं जान पाती। वह उसी छेद के कारण डूबती है, जिसे उसने मामूली-सी बात समझकर टाल दिया था। हर विपत्ति हम पर तभी हावी होती है, जब हम थोड़े-से ढीले पड़ जाते हैं। यदि हम प्रतिदिन सजग होकर इस बात पर दृष्टि दौड़ाते रहें कि हमारे प्रयत्नों और उद्योगों में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई, कहीं कोई छेद तो नहीं रह गया तो हमें कोई पराजित नहीं कर सकता। अपने कल को कायर और निकम्मे लोग ही याद करके पछताते रहते हैं। जहाँ हम कल खड़े थे, वहीं खड़े रहना अपराध है; जो कुछ और जिस रूप में हमने कोई काम कल किया था, उससे कहीं बेहतर करने का संकल्प और प्रयत्न करना हमारा धर्म होना चाहिए। इन प्रयत्नों को करते समय हमें साधनों के अभाव का रोना नहीं रोना चाहिए और न ही अपने भाग्य के भरोसे बैठा रहना चाहिए कि यदि भाग्य में होगा तो मिल जाएगा। साधनों और भाग्य का रोना कायर और अकर्मण्य लोग रोते हैं। पुरुषार्थी तो अपने पुरुषार्थ से असंभव को भी संभव बना देते हैं।

1. पानी कब नौका की जय-जयकार करता है–

(क) जब वह लहरों से टकराती है

(ख) जब वह डूबने लगती है

(ग) जब वह विजय-गर्व से लहरों पर दौड़ती है

(घ) जब वह लोगों को पार उतारती है।

2. नौका किस कारण से डूबती है–

(क) अधिक बोझ के कारण

(ख) मामूली से छेद के कारण

(ग) नाविक की लापरवाही के कारण

(घ) ऊँची लहरों के कारण।

3. गद्यांश में छेद किसका प्रतीक है–

(क) त्रुटि का (ख) लाभ का

(ग) हानि का (घ) गुणों का।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) –नौका अपने छोटे-से छेद के कारण डूबती है।

कारण (R)–छेद को उसने मामूली-सी बात समझकर टाल दिया था।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. साधनों और भाग्य का रोना कौन रोते हैं–

(क) पुरुषार्थी लोग (ख) धनहीन लोग

(ग) कायर और अकर्मण्य लोग (घ) धनवान लोग।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (घ) 5. (ग)।

(37) धनवान या विद्वान को जो प्रतिष्ठा दी जाती है या सर्वसाधारण में जो यश या नामवरी उसकी होती है, उसकी स्पर्द्धा सबको होती है। कौन ऐसा होगा, जो अपने वैभव, अपनी विद्या या योग्यता से औरों को अपने नीचे रखने की इच्छा न करता हो? शक्ति का एकमात्र आधार केवल चारुचरित्र वाले में अलबत्ता यह नहीं देखा जाता। वह यह कभी नहीं चाहता कि चरित्र के पैमाने में अर्थात् चरित्र क्या है, इसकी नाप-जोख में दूसरा हमारे आगे न बढ़ने पाए।

कार्य कारण का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। इस सूत्र के अनुसार, देश या जाति का एक-एक व्यक्ति संपूर्ण देश या जाति की सभ्यता रूप कार्य का कारण है, अर्थात् जिस देश या जाति में एक-एक मनुष्य अलग-अलग अपने चरित्र के सुधार में लगे रहते हैं, वह समग्र देश उन्नति की अंतिम सीमा तक पहुँच सभ्यता का एक बहुत अच्छा नमूना बन जाता है। नीचे-से-नीचे कुल में पैदा हुआ हो, बहुत पढ़ा-लिखा भी न हो, बड़ा सुबीते वाला भी न हो, न किसी तरह की कोई असाधारण बात उसमें हो, किंतु चरित्र की कसौटी में यदि यह अच्छी तरह कस लिया गया है तो उस आदरणीय मनुष्य का संभ्रम और आदर समाज में कौन ऐसा कम्बख्त होगा, जो न करेगा और ईर्ष्यावश उसके महत्त्व को मुक्तकंठ हो स्वीकार न करेगा। नीचे दरज़े से ऊँचे को पहुँचने के लिए चरित्र की कसौटी से बढ़कर और कोई दूसरा ज़रिया नहीं है। चरित्रवान् यद्यपि धीरे-धीरे बहुत देर से ऊपर को उठता है, पर यह निश्चित है कि चरित्रपालन में जो सावधान है, वह एक-न-एक दिन अवश्य समाज का अगुआ मान लिया जाएगा। हमारे यहाँ के गोत्र-प्रवर्तक ऋषि, भिन्न-भिन्न मत या संप्रदायों के चलाने वाले आचार्य, नबी, औलिया आदि सब इसी क्रम पर आरूढ़ रह लाखों-करोड़ों मनुष्यों के गुरु देववत् माननीय पूजनीय हुए; वरन् कितने उनमें से ईश्वर के अंश और अवतार माने गए।

1. लोग दूसरों को किसके द्वारा अपने से नीचे रखने की इच्छा करते हैं–

(क) अपने वैभव से (ख) अपनी विद्या से

(ग) अपनी योग्यता से (घ) ये सभी।

2. कौन व्यक्ति एक-दूसरे से आगे बढ़ने की स्पर्द्धा में शामिल नहीं होता–

(क) धनवान (ख) बलवान

(ग) चारुचरित्र वाला (घ) विद्वान।

3. कैसे व्यक्ति के महत्त्व को संपूर्ण समाज स्वीकार करता है–

(क) धनवान के (ख) विद्वान के

(ग) बलवान के (घ) चरित्रवान के।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) –यश और मान की स्पर्द्धा सबको होती है।

कारण (R)–लोग दूसरों को अपने से नीचे रखना चाहते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. 'यद्यपि' में कौन-सी संधि है–

(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि

(ग) यण् संधि (घ) वृद्धि संधि।

उत्तर— 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ग) 5. (ग)।

(38) मनुष्य के शरीर में आँसू भी गड़े हुए खज़ाने के माफ़िक हैं। जैसे भी कोई नाज़ुक वक़्त आ पड़ने पर संचित पूँजी ही काम देती है, उसी तरह हर्ष, शोक, भय, प्रेम इत्यादि भावों को प्रकट करने में जब सब इंद्रियाँ स्थगित होकर हार मान बैठती हैं, तब आँसू ही उन-उन भावों को प्रकट करने में सहायक होते हैं। चिरकाल के वियोग के उपरांत जब किसी दिली-दोस्त से मुलाकात होती है तो उस समय हर्ष और प्रमोद के उफ़ान में अंग-अंग ढीले पड़ जाते हैं, वाष्प गद्‌गद कंठ रुँध जाता है, जिह्वा इतनी शिथिल पड़ जाती है कि उससे मिलने की खुशी को प्रकट करने के लिए एक-एक शब्द मानो बोझ-सा मालूम पड़ता है। पहले इसके कि शब्दों से वह अपना असीम आनंद प्रकट करे, सहसा आँसू की नदी उसकी आँख में उमड़ आती है और नेत्र के पवित्र जल से वह अपने प्राण-प्रिय को नहलाता हुआ, उसे बगलगीर करने को हाथ फैलाता है। सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी भी इसी से हो सकती है। अपने उपास्यदेव के नाम-संकीर्तन में जिसे अश्रुपात न हुआ, मूर्ति का दर्शन कर प्रेमाश्रुपात से जिसने उसके चरण-कमलों का अभिषेक न किया, उस दांभिक को भक्ति के आभासमात्र से क्या फल? सरस कोमल चित्त वाले अपने मनोगत सुख-दुःख के भावों को छिपाने की हज़ार-हज़ार चेष्टा करते हैं कि दूसरा कोई उनके चित्त की गहराई को न थहा सके, पर अश्रुपात भाव-गोपन की सब चेष्टा को व्यर्थ कर देता है। मोती-सी आँसू की बूँदें जिस समय सहसा नेत्र से झरने लगती हैं, उस समय उसे रोक लेना बड़े-बड़े गंभीर प्रकृति वालों की भी शक्ति के बाहर होता है।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –मनुष्य के शरीर में आँसू गड़े हुए खज़ाने के समान हैं।
   कारण (R)–सहसा आँसू की नदी आँखों से उमड़ आती है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
2. **इंद्रियों के स्थगित होने पर मनुष्य किससे भावों को प्रकट करता है–**
   (क) वाणी से (ख) संकेत से
   (ग) लेखन से (घ) आँसुओं से।
3. **चिरकाल वियोग के बाद प्रिय मित्र से मिलने पर क्या स्थिति होती है–**
   (क) हर्षातिरेक से अंग ढीले पड़ जाते हैं
   (ख) वाष्प गद्‌गद कंठ रुँध जाता है
   (ग) जिह्वा शिथिल हो जाती है
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी क्या है–**
   (क) उपास्यदेव का नाम-संकीर्तन
   (ख) मधुर स्वर से भजन-गायन
   (ग) अच्छी पूजा सामग्री
   (घ) उपास्यदेव के प्रेम में अश्रुपात।
5. **भाव-गोपन की सारी चेष्टा को कौन व्यर्थ कर देता है–**
   (क) भाषण (ख) गायन
   (ग) अश्रुपात (घ) नृत्य।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)।

(39) जब जाति प्रथम-ही-प्रथम बनी थी, जब उसके सब नियम ठीक-ठीक थे। जो लोग उन नियमों को भंग करते थे, वह पतित समझे जाते थे और बिरादरी के बाहर कर दिए जाते थे। खाना-पीना आदि यथावत् व्यवहार उनके साथ रोक दिया जाता था। इस भय से कोई उन नियमों के उल्लंघन का साहस नहीं करता था, परंतु अब इस नई रोशनी के ज़माने में सब बात अस्त-व्यस्त-सी हो गई और होती जाती हैं। कहीं विद्या या धन के मद में उन्मत्त हो, कहीं सर्वजित काम और लोभ के चेष्टित के वशीभूत हो, कहीं मूर्खता महारानी के पुजारी बन नियमों की कुछ परवाह नहीं करते: जिसका परिणाम यह हुआ कि कोई बिरादरी अब शुद्ध न रह गई। झूठा कुलाभिमान लोगों की नस-नस में भरा हुआ है। इसका एक मुख्य कारण हमारे मन में यह भी खटक रहा है कि प्रायः जाति-पाँति और बिरादराने के मामलों में खूसट-दिमाग वाले बाबा आदम के परदादा बुड्ढों ही की प्रधानता रहती है, जो कट्टर कनसरवेटिव होते हैं अर्थात् परिवर्तन विमुखता जिनको जन्मघूटी के साथ पिला दी जाती है, संशोधन या परिवर्तन के जो महावैरी हैं। अब इस जाति-पाँति के नियमों में परिवर्तन आवश्यक है। बिना जिसके यह सब निरा ढकोसला हो रहा है, जो कुछ समाज को इससे यत् किंचित् लाभ भी पहुँच रहा है, सब छार में मिलता जाता है। जैसा बेहूदा तरीका बिरादरी का इस समय प्रचलित है, उससे कभी आशा नहीं की जा सकती कि जाति-पाँति के सत्यानाश बिना हुए उन्नति की हज़ार-हज़ार चेष्टा करने पर भी हमारी या हमारे देश की कभी तरक्की होगी।

1. **जब जाति सर्वप्रथम बनी, तब उसके नियम कैसे थे–**
   (क) बहुत सरल (ख) बहुत कठोर
   (ग) बहुत गलत (घ) ठीक-ठीक।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) –प्रारंभ में जाति के सब नियम ठीक-ठीक थे।
   कारण (R)–जाति-नियम तोड़ने वालों को पतित समझा जाता था।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **नई रोशनी के ज़माने में लोग किन कारणों से जाति-नियमों की परवाह नहीं करते–**
   (क) काम और लोभ के वशीभूत होने के कारण
   (ख) विद्या या धन के मद में उन्मत्त होने के कारण
   (ग) मूर्खता के पुजारी होने के कारण
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **किसके बिना जाति-व्यवस्था निरा ढकोसला हो गई है–**
   (क) कठोर नियमों के बिना
   (ख) नियमों में परिवर्तन के बिना
   (ग) नियमों में आस्था के बिना
   (घ) नियम तोड़ने वालों को दंड दिए बिना।
5. **जाति के नियमों में संशोधन या परिवर्तन के महावैरी कौन हैं–**
   (क) नए जमाने के युवा
   (ख) अशिक्षित लोग
   (ग) खूसट-दिमाग वाले परदादा बुड्ढे
   (घ) आजकल के राजनेता।

उत्तर— 1. (घ) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (ग)।

4. कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था–

(क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं

(ख) गलतियों के डर से कर्मचारी घबराए रहते थे

(ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था

(घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं।

5. कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है; क्योंकि–

(क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं

(ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है

(ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं

(घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है।

(3) हम इस देश में प्रजातंत्र की स्थापना कर चुके हैं, जिसका अर्थ है– व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धांतों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है, पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। इसीलिए हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छंदतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और संप्रदायों को स्वतंत्रतापूर्वक पनपने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को अपने में अभिन्न भाव से मिल जाने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को मिलने दिया और देश और विदेश से एकसूत्रता तलवार के ज़ोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की।

1. हमारी संस्कृति का मूलाधार है–

(क) संघर्ष (ख) प्रजातंत्र की स्थापना

(ग) अहिंसा (घ) स्वार्थ।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) – व्यक्ति और समाज के बीच विरोध का आभास होता है।

कारण (R)– व्यक्ति केवल अपनी उन्नति और विकास चाहता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' यह कथन है–

(क) श्रुति का (ख) नीति का

(ग) गांधीजी का (घ) प्रत्येक व्यक्ति का।

4. समाज और समाज के बीच का विरोध मिट सकता है–

(क) नैतिक चेतना द्वारा (ख) त्याग द्वारा

(ग) हिंसा द्वारा (घ) एकता द्वारा।

5. हमने एकसूत्रता स्थापित की–

(क) त्याग और अहिंसा द्वारा

(ख) प्रेम और सौहार्द द्वारा

(ग) तलवार द्वारा

(घ) उन्नति और विकास द्वारा।

(4) मान लीजिए सब सुख-ही-सुख होता, दुःख का कोई नाम तक न जानता होता तो इस संसार की क्या दशा होती। मैं समझता हूँ, तब यह दृश्य जगत् संसार इस नाम से कभी न कहा जाता; क्योंकि संसार तो उसे ही कहा जा सकता है, जो सदा एकरूप न रहे। 'संसार सम् उपसर्गपूर्वक सृ धातु से बना है, जिसके माने चलने के हैं।' जब सुख के सब कारण एक जगह आकर जड़वत् हो गए तो फिर इसमें रह ही क्या गया, बल्कि तब तो यह संसार उससे अधिक फीका होगा, जितना दुःखी को दुःख की दशा में बोध होता है। दूसरे दुःख ही मनुष्य को उभारने वाला है और अपने में उभारने की इच्छा ही से मनुष्य दुःख उठाकर भी उससे परे होने की अभिलाषा रखता है। दुःख को बरकाना या उसे कम करने का ही नाम भाँति-भाँति की तरक्की और उन्नति है। बड़े-बड़े सभ्य देश और जाति, जो आज उन्नति के शिखर पर हैं, पहले अत्यंत क्लेश और दुःख झेलकर उन्नति की इस चरमसीमा तक पहुँचे हैं। बिना क्लेश उठा सुख और ख्याति तो कभी मिलती ही नहीं, इसलिए सुख का हेतु भी हम दुःख ही मानेंगे। यदि सिंह आदि शिकारी जानवरों को अधिक भूख न होती और साधारण पशुओं के समान केवल घास-पात से पेट भरकर वे भी संतुष्ट रहते तो क्या वे इतने मज़बूत होते और यदि हिरन-खरगोश आदि जीवों को सिंह आदि शिकारी जानवरों से भय न रहता तो वे क्या इतने तेज़ वेगगामी होते। यदि भूख का दुःख न होता तो अमृत-समान भाँति-भाँति के सुस्वादु भोजन का सुख हम क्या जानते।

1. संसार किसे कहा जाता है–

(क) जो दिखाई दे (ख) जो दिखाई न दे

(ग) जो एकरूप रहे (घ) जो सदा एकरूप न रहे।

2. 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'सृ' धातु से बने 'संसार' शब्द का क्या अर्थ है–

(क) चलना (ख) टूटना

(ग) नष्ट होना (घ) बनना।

3. भाँति-भाँति की तरक्की किसका नाम है–

(क) सुख बढ़ाने का (ख) दुःख बढ़ाने का

(ग) दुःख को कम करने का (घ) सुख भोगने का।

4. सुस्वादु भोजन का सुख प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है–

(क) परिश्रम करना (ख) अच्छा भोजन बनाना

(ग) भूख का दुःख सहन करना (घ) धन अर्जित करना।

5. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A) –कष्ट उठाए बिना सुख और ख्याति नहीं मिलती।

कारण (R)–सुख का हेतु भी दुःख को माना जाता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।